वर्ष 23 । अंक 9 । अप्रैल, 2022

ISSN No. 2582-4546

₹ 30

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

अणुविभा

क्या आप जानते हो ?

तिआनमेन माउंटेन रोड, चीन

दुनिया की सबसे खतरनाक सड़कों में से एक, यह पहाड़ी सड़क चीन के हुनान प्रांत में है। यह सड़क पहाड़ की चोटी पर बनी तिआनमेन गुफाओं तक जाती है जिसे "स्वर्ग का द्वार" भी कहा जाता है। लगभग 11 किलोमीटर में 99 घुमावदार मोड़ों (Hairpin Bends) को पार करना होता है। यहाँ दुनिया की सबसे बड़ी केबल कार भी है जिसमें से इस सड़क का दृश्य बड़ा लुभावना लगता है।

कोल डे चौस्सी, फ्रांस

समुद्रतल से 5029 फीट ऊँचाई पर एल्प्स पर्वतमाला से गुजरती है यह अनोखी सड़क। घुमावदार पहाड़ी सड़क से यात्रा करते हुए यहाँ दुनिया के सबसे खूबसूरत प्राकृतिक दृश्यों का आनन्द लिया जा सकता है। इस सड़क का 3 किलोमीटर भाग सबसे अधिक रोमांचक है जिसमें 17 यू–टर्न हैं।

कोली हिल्स रोड, भारत

तमिलनाडु के नमक्कल जिले में कोली पर्वत श्रृंखला है। इन्हीं पहाड़ों में स्थित है यह खतरनाक सर्पीली सड़क। एक के बाद एक 70 घुमावदार मोड़ों को पार करना कोई हँसी खेल नहीं है। अनुभवी ड्राइवर ही यहाँ गाड़ी चला सकता है।

कहाँ क्या?

अंक विशेष

जनरल मानेक शॉ	: डॉ. लता अग्रवाल 'तुलजा'	– 11
होनहार बच्चे : नालिया मोलो	: शिखर चन्द जैन	– 14
नमक की कहानी	: नीरज कुमार मिश्रा	– 22
विश्व पुस्तक दिवस	: सुमन वाजपेयी	– 26
बिना पटरियों वाली ट्रेन	: किरण बाला	– 34
बास्केटबॉल : आविष्कार की कहानी	: अनिल जायसवाल	– 38

कहानी

स्टोव की आग	: रजनीकान्त शुक्ल	– 07
अप्रैल फूल बनाया	: गोविन्द भारद्वाज	– 09
घमंडी गोलू	: अखिलेश श्रीवास्तव चमन	– 15
नकली से सावधान	: समीर गांगुली	– 19
पत्रिकाएँ मुस्कुरा उठी	: विजय जी. खत्री (वलेरा)	– 23
कैसे बना जंगल	: एस. भाग्यम शर्मा	– 31
मटके वाली कुल्फी	: पवन कुमार वर्मा	– 35
मिन्नी की जिद	: इंजी. आशा शर्मा	– 39

कविता-गीत

मौसी की चतुराई	: राजेश अरोड़ा	– 06
प्लीज! दवाई नहीं ...	: डॉ. नागेश पांडेय 'संजय	– 10
बहन मेरी प्यारी है	: आलोक कुमार मिश्रा	– 10
नायक यदुनाथ सिंह	: डॉ. वेद मित्र शुक्ल	– 13
समय के मात्रक	: डॉ. कमलेन्द्र कुमा श्रीवास्तव	– 18
भर दो जग खुशियों से	: प्रभुदयाल श्रीवास्तव	– 18
साइकिल	: सुमन कुमार	– 30
मेरी पुस्तक	: पेन्टर मदनलाल	– 40

विविधा

वर्ग पहेली : परितोष पालीवाल	– 17	अंकों से चित्र बनाइये : चाँद मोहम्मद घोसी	– 32
बूझो तो जानें : दीनदयाल शर्मा	– 24	पत्र लेखन : दिलीप भाटिया	– 37
दिमागी कसरत : प्रकाश तातेड़	– 21	I like the most	– 46

स्तम्भ

क्या आप जानते हो ? – 2, सम्पादक की पाती –05, महाप्रज्ञ की कथाएँ– 06, जीवन विज्ञान के प्रयोग–08, आओ पढ़ें : नई किताबें – 25, दस सवाल : दस जवाब– 29, प्रेरक वचन, अन्तर ढूँढ़िये – 30, व्हाट्सएप कहानी– 33, सुडोकू–33, पढ़ो और जानो, उत्तरमाला – 41, कलम और कूँची– 42, नन्हा अखबार – 44, जन्मदिन की बधाई – 46, चित्र कथा–47, किड्स कॉर्नर–50,

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

वर्ष – 23 अंक –9 अप्रैल, 2022

प्रकाशक
अणुव्रत विश्व भारती
सहयोगी संस्थान
भागीरथी सेवा प्रन्यास

सम्पादक | संचय जैन 98290 52452

सह सम्पादक | प्रकाश तातेड़ 93515 52651

प्रबन्ध सम्पादक | निर्मल राँका, पंचशील जैन

कार्यालय | चन्द्रशेखर देराश्री

ग्राफिक डिजायन | गजेन्द्र दाहिमा

चित्रांकन | वेणु वरियाथ

सम्पादकीय कार्यालय

अणुव्रत विश्व भारती (अणुविभा)
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस
पोस्ट बॉक्स सं. 28
राजसमन्द – 313324 (राजस्थान)
bachchon_ka_desh@yahoo.co.in
9414343100

सदस्यता शुल्क

एक प्रति	: 30 रु.
वार्षिक	: 300 रु.
त्रैवार्षिक	: 800 रु.
पंचवार्षिक	: 1200 रु.
दस वर्ष	: 2400 रु.
पंद्रह वर्ष	: 7000 रु.

(कोरियर द्वारा 300 रु अतिरिक्त प्रतिवर्ष)
विदेश के लिए वार्षिक शुल्क $ 20

प्रकाशक मुद्रक व सम्पादक

संचय जैन द्वारा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, राजसमन्द के लिए प्लेजर डिजिटल प्रेस, 10, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर (राज.) से मुद्रित एवं चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, राजसमन्द से प्रकाशित

सदस्यता शुल्क भेजने हेतु -

ANUVRAT VISHWA BHARTI SOCIETY
IDBI Bank BRANCH Rajsamand
A/c No. : 104104000046914 IFS Code : IBKL 0000104
Send Payment Information On Whatsapp No. 9116634513

'बच्चों का देश' मासिक में प्रकाशित रचना व चित्र सहित समस्त सामग्री के प्रकाशन का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लिखित अनुमति प्राप्त कर इनका उपयोग किया जा सकता है। समस्त कानूनी मामलों का न्याय क्षेत्र केवल राजसमन्द होगा।

www.anuvibha.org www.bachchonkadesh.com www.facebook.com/bkdpage

सम्पादक की पाती

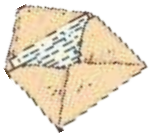

प्यारे बच्चो,

गुप्ता अंकल के घर के बाहर एक चौक है और छोटा सा बगीचा भी है। उनको बागवानी का बड़ा शौक है। आरुषि भी बागवानी में दादा की मदद करती है। सब वहीं बैठे बातें कर रहे थे। आरुषि को अभी हाल ही में स्कूल में पर्यावरण मित्र पुरस्कार मिला था। उसकी मम्मी बड़े गर्व से सबको बता रही थी– ''मेरी आरुषि तो लाखों में एक है। स्कूल में सब इसकी तारीफों के पुल बाँधते रहते हैं। इस बार मैं इसका नाम नेशनल अवार्ड के लिए भेजूँगी। देखना, जरूर मिलेगा इसे नेशनल अवार्ड!''

थोड़ी देर बड़ों के साथ बैठकर सौम्या और आरुषि बगीचे में खेलने लगी। आरुषि ने उसे कुछ पौधों के बारे में भी बताया जो दादाजी के साथ मिलकर वह कल ही नर्सरी से लाई थी। सौम्या का आज यहाँ मन नहीं लगा, अनमनी सी रही। घर लौटते वक्त सौम्या को चुप-चुप देख कर दादाजी ने पूछा– ''क्या हुआ बेटा? उदास सी लग रही हो!''

पहले तो वह टालती रही लेकिन दादाजी के ज्यादा जोर देने पर बोली– ''दादाजी, मुझे भी तो स्कूल में बेस्ट स्टूडेंट का अवार्ड मिला था। सबने मुझे शाबासी दी और बस... देखा, आरुषि की मम्मी उसकी कितनी बड़ाई कर रही थी! आरुषि के मम्मी पापा उसे कितना प्यार करते हैं!''

दादाजी बोले– ''यह प्यार नहीं है बेटा। इस तरह जरूरत से ज्यादा तारीफ करते रहना बच्चों के विकास में रुकावट बन जाता है। यह बात मैं गुप्ता को भी समझा कर आया हूँ।'' सौम्या आश्चर्य में थी– ''रुकावट कैसे दादाजी?''

दादाजी ने समझाया– ''सौम्या, इससे बच्चे तारीफों के गुलाम हो जाते हैं। कोई काम वो तारीफ पाने के लिए ही करते हैं। और जब उन्हें तारीफ नहीं मिलती, या वे किसी काम में असफल हो जाते हैं तो उसे सहन नहीं कर पाते। बेचैन हो जाते हैं। टेंशन में आ जाते हैं।''

दादाजी ने प्यार से सिर पर हाथ फेरते हुए कहा– ''हम तुम्हें आगे बढ़ते देखना चाहते हैं सौम्या, तारीफों का गुलाम बनते हुए नहीं। न तुम्हें सफलता में घमंड करना है और न विफलता में निराश होना है। बस आगे बढ़ते रहना है।'' ''मेरे प्यारे दादाजी...'' कहते हुए सौम्या दादाजी से लिपट गई।

बच्चो! हमेशा याद रखना, केवल प्रशंसा पाने के लिए कोई काम करना सफलता नहीं होती, अपने विकास के लिए निरन्तर काम करते रहना ही असली सफलता होती है।

आपका ही,

संचय

महाप्रज्ञ की कथाएँ

कला का मूल्य

एक बहुत बड़ा कलाकार था। वह जिस मोहल्ले में रहता था, वहाँ अनेक धनी लोग रहते थे। वह घूमने निकलता, जो भी सामने मिलता, वह उसका अभिवादन करता।

एक बार राजा ने कलाकार को अपने दरबार में आमन्त्रित किया। साथ ही साथ उस मोहल्ले के धनी लोगों को भी आमन्त्रित किया। राजा दरबार में बैठा था। धनी लोग आ रहे थे और अपने पूर्व निर्धारित स्थान पर बैठ रहे थे। एक सेवक उन्हें नियत स्थान पर बिठा रहा था। राजा का उनकी ओर कोई खास ध्यान नहीं था।

इतने में कलाकार पहुँचा। उसको देखते ही राजा उठ खड़ा हुआ। उसको नमस्कार कर अपने पास बैठा लिया। राजसभा में कलाकार ने अपनी कला का प्रदर्शन किया। राजा उसे देखकर मुग्ध हो गया।

सभा विसर्जित हुई। सब अपने–अपने घरों को जाने लगे। कलाकार ज्योंही बाहर निकला, उन धनिकों ने उसे घेर लिया और पूछा– ''तुम हम सबको प्रणाम करते हो और राजा स्वयं तुम्हें प्रणाम करता है, यह आश्चर्य की बात है।''

कलाकार ने विनम्र भाव से कहा– ''जो कला का मूल्य नहीं जानते, उन्हें कलाकार प्रणाम करता है और जो कला का मूल्य जानते हैं, वे कलाकार को प्रणाम करते हैं।''

कथाबोध– जो जिसका गुण जानता है उसे वह आदर देता है।

पद्य कथा

मौसी की चतुराई

कर में माला, कंठ दुशाला,
बिल्ली चली गंगा–स्नान।
राह रोक कर कुत्ता बोला,
कहाँ जा रही मेहमान?

बिल्ली बोली– रोक मुझे मत,
बहुत किए हैं मैंने पाप।
अन्त समय करने दे जाकर,
तीर्थ–स्थान पर थोड़ा जाप।।

कुत्ते ने जब एक ना सुनी,
मुँह से टपकी उसके लार।
अपनी जान बचाने को तब,
तुरन्त चली बिल्ली ने चाल।।

बोली– मुझको खा लेना पर
इच्छा मेरी पूरी कर दो।
यह लो माला आँख मूँदकर,
मेरे नाम की माला जप दो।।

कुत्ते ने जब आँख मूँद कर,
शुरू किया माला का जाप।
मौका पाकर तभी वहाँ से,
खिसक गई बिल्ली चुपचाप।।

राजेश अरोड़ा
गजसिंहपुर (राजस्थान)

स्टोव की आग

भारत का पूर्वोत्तर राज्य मिजोरम। चाँदमारी के निकट बुकपुई नामक गाँव की नौ वर्षीय पाँचवीं कक्षा में पढ़ने वाली लालमोई अपनी सहेलियों के साथ आपस में बातचीत करती हुई स्कूल से घर आ रही थी। यह 12 नवम्बर 2009 की बात है। ''लालमोई तुम खाना खाकर कुछ देर के बाद मेरे घर खेलने आ जाना।'' उसके साथ चल रही सहेली ने कहा। ''नहीं बहन, आज नहीं आ पाऊँगी। आज मुझे घर पर कुछ काम है।'' –लालमोई ने कहा।

''क्यों ऐसा क्या काम है तुम्हें, जो खेलने भी नहीं आ पाओगी?''– उसकी सहेली ने पूछा। ''मेरे मम्मी पापा काम पर गए हैं और आज वो देर से लौटेंगे इसलिए मुझे रात का खाना बनाना है।'' –लालमोई ने कहा। यह सुनकर उसकी सहेलियों को आश्चर्य हुआ। ''क्यों, तुझे खाना बनाना आता है क्या?'' –एक ने उससे पूछ लिया। ''हाँ, क्यों नहीं, एक बार जब मेरे मम्मी पापा देर से घर लौटे थे तो घर पर खाना न होने के कारण मैं भूखी रह गई थी। तब मेरी मम्मी ने मुझे स्टोव पर खाना बनाना सिखा दिया था। तभी से मुझे खाना बनाना आ गया है।'' –लालमोई ने बताया। उसकी बातों में आत्मविश्वास और गर्व का भाव था।

चलते–चलते घर नजदीक आ चुका था। लालमोई ने सहेलियों से विदा ली। सहेलियों ने कहा– ''ठीक है बहन, आज अगर काम है तो कोई बात नहीं आज न सही, हम लोग कल खेल लेंगे।'' ''ठीक है।'' –कहते हुए लालमोई अपने घर की ओर मुड़ गई।

सहेलियों से विदा लेकर लालमोई जब अपने घर पहुँची तो खाना खाकर उसने कुछ देर आराम किया। फिर वह उठी और रात के खाने के इंतजाम में जुट गई। घर में उसके साथ उसकी तीन साल की छोटी बहन जोनुनसांगी भी थी। उसे नींद आ रही थी इसलिए वह दूसरे कमरे में जाकर बिस्तर पर लेट गई। अब लालमोई खाना बनाने में लग गई। उसने पहले खाना बनाने का सारा सामान जुटा लिया उसके बाद स्टोव जलाने में लग गई। स्टोव में पम्प से हवा भरकर उसने जब तक आग जलाई तब तक उसमें तेल ज्यादा निकल गया। नतीजा यह हुआ कि आग जलते ही जोर से भभक उठी और स्टोव के ऊपर बिखरा हुआ तेल बहुत तेजी से जलने लगा।

अचानक हुए इस हादसे से लालमोई पीछे हट गई। इससे वह तो बच गई मगर जलते हुए आग की लपट ने घर की बाँस की दीवार को अपने लपेटे में ले लिया। यह देखकर लालमोई घबरा गई और वह घर में रखी पानी से भरी बाल्टी लेने के लिए दौड़ पड़ी। उसने जल्दी से बाल्टी उठाई और जलती हुई बाँस की दीवार पर उलट दी। मगर उस पानी से वह आग नहीं बुझी और कुछ ही देर में उसने फिर से तेजी पकड़ ली।

अब घर में भरा हुआ पानी उपलब्ध नहीं था। उधर बाँस का घर होने के कारण आग तेजी से बढ़ती जा रही थी। अब तक किए गए प्रयास में वह असफल हो गई तो उसने आस पास कोई और बचाव का साधन न देखकर खुद को बचाने के लिए सोचा। हड़बड़ी में वह तेजी से घर के एकमात्र दरवाजे से बाहर की ओर भागी। बाहर निकलते ही यकायक

देखें पृष्ठ 13...

जीवन विज्ञान के प्रयोग

दीर्घ श्वास और चिन्तन

आप जानते हैं कि चिन्तन, मनन, स्मृति, कल्पना आदि का स्रोत दिमाग है, यह किससे बना है? कोशिकाओं से, जिन्हें न्यूरोन कहा जाता है। न्यूरोन कैसे स्वस्थ रहते हैं? खुराक से। खुराक का एक साधन है– ऑक्सीजन या प्राण वायु। अगर दिमाग के न्यूरोनों को प्राण वायु उचित मात्रा में नहीं मिलती, तो वे अस्वस्थ हो जाते हैं। बहुत से नष्ट भी हो जाते हैं। छोटे–छोटे श्वास से पूरी प्राण वायु दिमाग तक नहीं पहुँच पाती। दीर्घ श्वास से पूरी प्राण वायु दिमाग तक पहुँचती है और कार्बनडाइऑक्साइड बाहर निकल जाती है। इस तरह दिमाग के न्यूरोन स्वस्थ रहने से वह स्मृति, चिन्तन, कल्पना आदि का काम अच्छी तरह कर सकता है।

दिमाग कई हिस्सों में बँटा हुआ है। लघु दिमाग, बायाँ गोलार्द्ध, अवचेतक आदि। इनमें भी दिमाग का बहुत बड़ा हिस्सा सोया पड़ा है। दीर्घश्वास के द्वारा सोये हिस्से को जगाया जा सकता है। सोये हिस्से के जितने भी भाग में जागरण आता है, सोच या चिन्तन के उतने ही नए द्वार खुलते हैं, इसलिए दीर्घश्वास का अनेक केन्द्रों के साथ गहरा सम्बन्ध हैं। इन्हें चैतन्य केन्द्रों के नाम से जाना जाता है।

दीर्घ श्वास

जरा श्वास पर ध्यान दें। संकल्पपूर्वक लम्बा श्वास लें। श्वास की गति मन्द हो जायेगी, मन एकाग्रता का यह एक साधन है। श्वास की चंचलता जितनी कम होगी, उतनी मन की चंचलता कम होगी। चंचलता एकाग्रता में बाधक है। चंचलता मिटते ही एकाग्रता सध जाती है। एकाग्रता सधते ही चिन्तन गहरा हो जाता है।

मन जब अतीत की स्मृतियों में खो जाता है, तब वह भटकता ही रहता है, वह कभी भी वर्तमान में नहीं रह पाता, क्योंकि न तो वह अतीत से सबक सीखता है, न भविष्य के लिए संकल्पबद्ध होता है।

अतीत की गलतियों को प्रायश्चित द्वारा निर्मल बनाकर भविष्य में गलती न करने का उपाय करें। भविष्य के लिए संकल्पबद्ध हों, तभी वर्तमान में कार्यरत रहा जा सकता है। दीर्घश्वास के अभ्यास बिना अतीत की और भविष्य की भटकन नहीं मिटती।

दीर्घ श्वास के लाभ–दीर्घ श्वास के अभ्यास से चित्त वर्तमान में आता है। दीर्घश्वास से दिमाग की कुशलता बढ़ जाती है। यहाँ नीचे वाले अर्द्ध गोलार्द्ध में अतीत के अवलोकन, वर्तमान में समता और भविष्य में सत्संकल्प को दर्शाता है। दीर्घश्वास और चिन्तन का गहरा सम्बन्ध है श्वास जितना शान्त और प्रलम्ब होता है, उतने ही विचार गम्भीर और निर्मल होते हैं। दीर्घ श्वास अन्तः दृष्टि को उजागर करता है। इसीलिए प्रेक्षाध्यान में दीर्घश्वास प्रेक्षा को अत्यन्त महत्त्व दिया गया है। इससे ही व्यक्ति का स्वभाव तटस्थ और जागरूक बनता है।

अप्रैल फूल बनाया

सेठ लोभीराम बड़ा ही कंजूस आदमी था। वह कई–कई दिनों तक इसलिए भी नहीं नहाता था ताकि कहीं साबुन जल्दी घिस न जाए। वह मैले–कुचैले कपड़े पहन कर ही अपनी दुकान पर बैठा रहता था। उसके नौकर उसकी कंजूसी की आदत से बहुत दुःखी थे। वह दुकान पर बिना चुपड़ी रोटी और पानी वाली पतली–पतली दाल के अलावा कुछ भी खाने के लिए नहीं मँगवाता था।

एक अप्रैल के दिन दुकान के करने नौकरों ने सेठ को मूर्ख बनाने की ठान ली। एक नौकर सेठ जी के घर पहुँच गया और सेठानी से बोला– "सेठानी जी, आज कुछ लोग आपके मायके से आए हैं और दुकान पर सेठ जी के साथ बैठे हैं। सेठ जी ने संदेश भिजवाया है कि आज वे मेहमानों के साथ दुकान पर ही भोजन करेंगे। इसलिए चार–पाँच आदमियों का भोजन बनाकर मुझे दे देवें।"

सेठानी अपने मायके वालों की खबर सुनते ही फटाफट अनेक प्रकार के व्यंजन तैयार करने में जुट गयी। नौकर वहाँ बैठा–बैठा मन ही मन मुस्करा रहा था। एक घंटे में सेठानी जी ने एक से बढ़कर एक व्यंजन तैयार कर दिए और उस नौकर को दे दिया। भोजन लेकर नौकर तुरन्त दुकान पर पहुँच गया। दोपहर में जब भोजन का समय हुआ तो सेठजी ने पूछा– "अरे आज मेरा भोजन घर से कोई लाया नहीं... क्या बात है?" "बात–वात कुछ नहीं सेठ जी, आज मेरी शादी की सालगिरह है, इसलिए मैं ही आज आपका और अपने साथियों का खाना अपने घर से बनवाकर लाया हूँ।'' एक नौकर ने थाली में खाना परोसते हुए कहा।

सेठजी को जब स्वादिष्ट भोजन की सुगन्ध आई तो उनकी लार टपकने लगी। कंजूस सेठ ने कई दिनों से ऐसा पकवान नहीं खाया था। उसकी भूख जाग उठी। "अरे भैया जल्दी करो... बड़े जोर की भूख लग रही है। पेट में चूहे कबड्डी खेल रहे हैं।" जैसे ही भोजन की थाली सामने आई टूट पड़े सेठजी। वह मन ही मन सोच रहा था कि– ''हींग लगी न फिटकरी... रंग चोखो ही चोखो।'' खाना खाने के बाद सेठजी ने लम्बी डकार लेते हुए कहा– "बहुत–बहुत बधाई हो... तुम्हारी जोड़ी सलामत रहे।" "बधाई किस बात की सेठजी। सब आपका ही आशीर्वाद है...। हम तो आपका ही दिया खा रहे हैं।" नौकर ने कहा। वो बोला– "सो तो है।"

देखें पृष्ठ 13...

प्लीज! दवाई नहीं पिलाओ

मम्मी! बात मान भी जाओ,
प्लीज! दवाई नहीं पिलाओ।

अब बुखार तो बचा तनिक–सा,
छू मंतर हो गया जुकाम।
आज नहीं सिर दर्द हुआ जी,
लगा लिया था मैंने बाम।
अब तो कुछ चटपटा खिलाओ।
प्लीज! दवाई नहीं पिलाओ।

उफ! कड़वी थी बहुत गोलियाँ,
जैसे–तैसे खाई थी।
कुछ तो आ आ करके मुँह में,
दीदी से डलवाई थी।
बुरा वक्त मत याद दिलाओ।
प्लीज! दवाई नहीं पिलाओ।

अरे! दवाई पी लो बेटे,
अब मत फिर से चढ़े बुखार।
बीमारी को सदा पटखनी
देने को रहना तैयार।
लापरवाही नहीं दिखाओ।
बेटे! बात मान भी जाओ।

डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'
शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश)

बहन मेरी प्यारी है

आलोक कुमार मिश्रा
दिल्ली

वैसे गुस्से की मारी है
पर बहन तो मेरी प्यारी है।

लड़ने में पीछे नहीं हटती,
हरदम रोती चिढ़ती रहती,
शिकायतों भरी पिटारी है।
पर बहन तो मेरी प्यारी है।

माँ बापू की वही लाडली,
बातों की वह भरी बाटली,
खिलते फूलों की क्यारी है।
पर बहन तो मेरी प्यारी है।

गाती कभी बेसुरा जब भी,
दाद वो लेती हमसे तब भी,
हर लीला उसकी न्यारी है।
पर बहन तो मेरी प्यारी है।

पर मुझको है बात पता यह,
ढूँढे मुझे ही शाम सुबह वह,
मुझसे ही उसकी यारी है।
हाँ, बहन तो मेरी प्यारी है।

देशभक्त योद्धा, प्रथम फील्ड मार्शल

जनरल मानेक शॉ

स्वयं को स्वतन्त्र भारत का नागरिक कहलाते हुए हम बहुत गर्व का अनुभव करते हैं, किन्तु हमें स्वतन्त्र बनाने में जिन योद्धाओं ने अपने जीवन को संकट में डाला हम उनमें से कितनों को जानते हैं ?

आज मैं आपको एक योद्धा के बारे में बताने जा रही हूँ जिनका नाम था "सैम होर्मूसजी फ्रेमजी जमशेदजी मानेक शॉ" हैरान हो गए न, नाम सुन कर... बच्चो, जितना बड़ा नाम है उतना ही बड़ा काम भी इन्होंने किया है। इन्हें 'सैम बहादुर' या 'मानेकशॉ' के नाम से भी जानते हैं।

पूत के पाँव पालने में

गुजरात के वलसाड़ शहर में एक पारसी परिवार रहता था जो बाद में अमृतसर पंजाब आकर बस गया। वहीं 3 अप्रैल 1914 को मानेकशॉ जी का जन्म हुआ। कहते हैं न पूत के पाँव पालने में ही दिख जाते हैं। बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि, न्याय प्रिय, अदम्य साहस और दृढ़ निर्णय क्षमता वाले इस बालक ने अमृतसर से अपनी प्राथमिक शिक्षा पूरी की। फिर नैनीताल के शेरवुड कॉलेज में उच्च शिक्षा पूरी कर देहरादून के इंडियन मिलिट्री के पहले बैच के चयनित चालीस छात्रों की सूची में अपना स्थान बनाया। वहाँ से पास होकर ब्रिटिश इंडियन आर्मी (स्वतन्त्रता के बाद भारतीय सेना) में सैकंड लेफ्टिनेंट बन गए।

महायोद्धा सैम बहादुर

उन्होंने पहली बार द्वितीय विश्व युद्ध में अपनी भागीदारी की, फिर बर्मा अभियान के दौरान जापानियों से लड़ते हुए पेट में कई गोलियाँ लगने पर वे गम्भीर रूप से घायल हो गये। ऐसा लगा कि उनका बचना लगभग नामुमकिन है किन्तु उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। स्वस्थ होने पर पुनः एक बार बर्मा के जंगलों में लेफ्टिनेंट बनकर जापानियों से दो–दो हाथ करने जा पहुँचे।

वर्ष 1947–48 भारत–पाकिस्तान युद्ध में भी उन्होंने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1971 के युद्ध में आर्मी चीफ मानेकशॉ ने अद्‌भुत नेतृत्व क्षमता और रणनीतिक कौशल का परिचय देते हुए पाक सेना को समर्पण करने पर मजबूर कर दिया। 45000 से ज्यादा पाकिस्तानी सैनिक और इससे भी ज्यादा नागरिकों को बंदी बना लिया गया। भारत की आजादी के बाद गोरखों की कमान सँभालने वाले वे पहले भारतीय अधिकारी थे। उन्हें 'सैम बहादुर' नाम गोरखों का ही दिया हुआ है

उन्हें भारत पाकिस्तान युद्ध के हीरो के रूप में याद किया जाता है। उनके नेतृत्व में ही भारतीय सेना ने पाकिस्तान पर जीत हासिल की थी। उनके ही नेतृत्व में बांग्लादेश ने आजादी पाई।

विभिन्न सेवाएँ

उनकी ईमानदारी, देश के प्रति निष्ठा का देश सदैव ऋणी रहेगा। उन्हें सैम मानेक शॉ जनरल कुमारमंगलम के बाद भारत के 8वें चीफ ऑफ द आर्मी स्टाफ रहे। उन्होंने शिमला समझौते और भारत पाक युद्ध में अपना नेतृत्व सेना को प्रदान किया। अपने निडर स्वभाव और स्पष्टवादिता के रहते उन्हें विवादों में भी उलझाया गया। तब जब चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया उनके नेतृत्व का लोहा मानते हुए

मानेक शॉ को लेफ्टिनेंट जनरल पदोन्नत कर सेना के चौथे कॉर्प्स की कमान सँभालने के लिए तेज़पुर भेज दिया गया। सेना से सेवानिवृत्ति के बाद मानेक शॉ कई कंपनियों में स्वतन्त्र निदेशक के पद पर रहे और कुछ कंपनियों के अध्यक्ष भी। इन्फेंट्री ब्रिगेड के नेतृत्व के बाद उन्हें महो स्थित इन्फेंट्री स्कूल का कमांडेंट बनाया गया और वे 8वें गोरखा राइफल्स और 61वें कैवेलरी के कर्नल भी बने। इसके अतिरिक्त जम्मू कश्मीर में एक डिवीज़न के कमांडेंट रहे। जिसके पश्चात वे डिफेन्स सर्विसेज स्टाफ कॉलेज के कमांडेंट बन गए। नेपाल सरकार ने भी सन् 1972 में उन्हें नेपाली सेना में 'मानद जनरल' का पद दिया।

जाबांज सैनिक

एक जाबांज सैनिक की पहचान होती है कि वह अपने कर्त्तव्य के अतिरिक्त किसी से समझौता नहीं करता। मानेक शॉ पर यह बात पूरी तरह खरी उतरती है। उनके काम के कारण उनकी बढ़ती प्रसिद्धि को देखते हुए एक दिन तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने उनसे पूछा कि– "ऐसी चर्चा है कि आप मेरा तख़्ता पलटने वाले हैं?" सैम ने अपने जिन्दादिल अन्दाज में कहा– "क्या आपको नहीं लगता कि मैं आपका सही उत्तराधिकारी साबित हो सकता हूँ? क्योंकि आप ही की तरह मेरी भी नाक लम्बी है।" फिर सैम ने कहा– "लेकिन मैं अपनी नाक किसी के मामले में नहीं डालता और सियासत से मेरा दूर–दूर तक कोई वास्ता नहीं और यही अपेक्षा मैं आप से भी रखता हूँ।" ऐसे ही उनकी निडरता का एक और प्रमाण कि प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को सभी 'मेम' कहकर सम्बोधित करते थे। किन्तु मानेक शॉ ने यह कहकर उन्हें मेम कहने से इनकार कर दिया कि यह सम्बोधन किसी खास व्यक्ति के लिए होता है। मैं उन्हें प्रधानमन्त्री ही कहूँगा। निर्भीकता उनकी पहचान थी।

सम्मान

अपने काम के प्रति समर्पण और बहादुरी को देखते हुए मानेक शॉ को 1946 में वे फर्स्ट ग्रेड स्टॉफ ऑफिसर पद पर पदोन्नति मिली। जिस समय जापानियों से युद्ध करते हुए वे गम्भीर रूप से घायल हुए थे, तब उनके अदम्य साहस से प्रभावित बर्मा मोर्चे के कमांडिंग आफिसर मेजर जनरल डी.टी. कॉवन ने उन्हें जीवन–मृत्यु से संघर्ष करते देख अस्पताल के बिस्तर पर ही स्वयं का 'मिलिट्री क्रास' (सैन्य क्रॉस) उन्हें प्रदान करते हुए कहा– ''मरने के बाद पदकों का कोई मोल नहीं होता।'' उन्हें सेनाध्यक्ष बनाया गया और 'फील्ड मार्शल' का सम्मान प्रदान किया गया। तरक्की की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए सैम को नागालैंड समस्या को सुलझाने में अविस्मरणीय योगदान के लिए भारत के तीसरे बड़े सम्मान 'पद्मभूषण' से नवाजा गया। बाद में उनके देशप्रेम व देश के प्रति निःस्वार्थ सेवा भावना के चलते उन्हें देश का दूसरा बड़ा सम्मान 'पद्मविभूषण' प्रदान किया गया।

फिल्मांकन

सैम बहादुर पर एक डाक्यूमेंट्री फिल्म भी बनी है, जिसका नाम है, 'इन वार एंड पीस : द लाइफ ऑफ फील्ड मार्शल' यह फिल्म सैम मानेक शॉ' द्वारा अपने पोते को बताए गए युद्ध किस्सों पर आधारित है। फिल्म में सैम मानेक शॉ अपने पोते को भारत के कुछ यादगार ऐतिहासिक पलों के बारे में जानकारी देते हैं। उन्होंने बहुत युद्ध देखे, युद्ध की हिंसा और तबाही को वो सम्भवतः भूल जाना चाहते थे, बाकि जीवन शांति से व्यतीत करना चाहते थे। इसलिए सेवा निवृत्ति के पश्चात् वे अपनी धर्मपत्नी के साथ तमिलनाडु कुन्नूर में बस गए।

निर्वाण

यूं तो मानेक शॉ जी ने अपना जीवन लम्बी आयु के साथ बहुत ही सम्मान से जिया। जीवन के 94 वर्ष में उन्हें फेफड़े सम्बन्धी बीमारी हो गई, एक बार निमोनिया की शिकायत होने पर वे अस्पताल में भर्ती हुए और कोमा में चले गए। कुछ दिनों बाद तमिलनाडु वेलिंगटन के सैन्य अस्पताल में 27 जून 2008 को उन्होंने अन्तिम साँस ली। देश के ऐसे वीर सपूत को हमारा शत शत नमन!

डॉ. लता अग्रवाल 'तुलजा'
भोपाल (मध्य प्रदेश)

परमवीर चक्र विजेता

नायक यदुनाथ सिंह

बच्चो! इक सैनिक था जिसने—
ब्रह्मचर्य का वचन लिया था,
शाकाहारी रह कुश्ती में
उसने अपना नाम किया था।

वह नायक यदुनाथ सिंह था
एक अकेला दस पर भारी,
काश्मीर में नौशेरा की
उसे मिली थी चौकीदारी।

साथ नहीं ज्यादा सैनिक पर,
यदुनाथ सिंह हिम्मत वाले,
परमवीर वह ऐसा बच्चो!
जो सीने पर गोली खा ले।

ऐसा ही था हुआ, वीरगति—
उसने बच्चो! आखिर पायी,
पर, नौशेरा बचा लिया औ'
दुश्मन को थी धूल चटायी।

डॉ. वेद मित्र शुक्ल, नई दिल्ली

'स्टोव की आग' पृष्ठ 7 का शेष....

यकायक उसका दिल धक से रह गया। उसे याद आया— परन्तु दूसरे कमरे में मेरी बहन जोनुनसांगी लेटी हुई है।

''ओह, अब क्या करूँ?'' — लालमोई ने एक पल सोचा और फिर घर के अन्दर वापस आई। उसने सोने वाले कमरे में जाकर अपनी बहन को उठाया और उसे लेकर दरवाजे के बाहर कूद गई। अब तक आग की लपटों ने पूरे घर को अपने चंगुल में ले लिया था। इस अग्निकाण्ड को देखकर आस पास के कई लोग दौड़ते हुए वहाँ जमा हो गए। उन्होंने उस आग को बुझाने की कोशिश की। मगर बाँस का घर होने के कारण वे उस आग पर जल्दी काबू नहीं कर पाए। कुछ ही देर में फर फर करता हुआ सारा घर राख की ढेरी में बदल चुका था।

इस दुर्घटना में घर के जलने के साथ—साथ उसमें रखा हुआ गृहस्थी का सारा सामान जलकर स्वाहा हो चुका था। मगर अपार साहस का परिचय देते हुए लालमोई ने अपनी बहन की प्राण रक्षा कर ली थी। सभी ने लालमोई के इस साहस की सराहना की। उसे इस बहादुरी के प्रदर्शन के लिए वर्ष 2010 के राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार के लिए चुना गया। गणतन्त्र दिवस के अवसर पर देश के प्रधानमन्त्री जी के द्वारा उसे यह पुरस्कार दिल्ली में प्रदान किया गया।

रजनीकान्त शुक्ल
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

'अप्रैल फूल बनाया' पृष्ठ 9 का शेष....

शाम को सेठजी दुकान मंगल करके अपने घर पहुँचे। सेठानी जी ने पूछा— "अजी मेरे मायके से कौन—कौन आए थे...? और उन्हें घर क्यों नहीं लाए?" "कैसे और किसके मायके वाले... तुम किसकी बात कर रही हो भाग्यवान?" सेठ ने झुँझलाते हुए पूछा। सेठानी बोली— "अजी मेरे मायके वाले, जिनके लिए तुमने कई तरह के पकवान मँगवाये थे, दुकान पर।" "किसके हाथ मँगवाए था मैंने पकवान?" सेठ चिल्ला कर बोला। "तुम ने ही तो रतिया को भेजा था दुकान से... वही ले गया था।" सेठानी ने भी उसी लहजे में जवाब दिया।

इतना सुनते ही सेठ जी ने अपना माथा पकड़ लिया। वह समझ गया कि जो भोजन उसे परोसा गया था, वह उसी के घर का था। कंजूस सेठ अपने ही नौकरों के हाथों बेवकूफ बन चुका था। वह सेठानी से बोला— "अरी भाग्यवान उन नालायकों ने हमें मूर्ख बना दिया। सबसे ज्यादा तो तुम मूर्ख बनी हो जो मायके वालों का नाम सुनते ही कई तरह के पकवान बनाकर भिजवा दिए। कभी मैंने बनवाया था ऐसा खाना?" ये सुनकर सेठानी कह उठी— "अजी आज एक अप्रैल है ना... इसलिए उन सब ने मूर्ख दिवस मना लिया अपने साथ।" "हाय राम! अप्रेल फूल बन गया मैं।" सेठ जी ने अफसोस जताते हुए कहा।

गोविन्द भारद्वाज
अजमेर (राजस्थान)

बायोप्लास्टिक बनाने की कोशिश

नालिया मोलो

कनाडा में रहने वाली 15 वर्षीय आविष्कारक नालिया मोलो इन दिनों फ्लैक्सिबल सोलर सेल्स और बायोप्लास्टिक बनाने की दिशा में रिसर्च कर रही है।

नैनो टेक्नोलॉजी पर झुकाव

नैनो टेक्नोलॉजी नालिया का पसन्दीदा विषय है– पर्यावरण के प्रति जागरूक नालिया इसके संरक्षण और शुद्धीकरण के लिए हमेशा कारगर उपाय सोचती रहती है। इसके लिए उसे नैनोटेक्नोलॉजी सबसे अच्छी लगती है। उसका मानना है कि आने वाले दिनों में हमारी जिन्दगी के हर पहलू पर नैनो टेक्नोलॉजी का प्रभाव होगा और यह हमारी जीवनशैली, ऊर्जा के स्रोत व पर्यावरण जैसे मामलों में बेहद उपयोगी साबित होगी। पर्यावरण, सेहत और जीवनशैली में सुधार के लिए नालिया फॉसिल फ्यूल्स यानी जीवाश्म ईंधन के प्रयोग पर लगाम चाहती है।

लिख डाली किताबें

रिसर्च के साथ–साथ नालिया को लिखने पढ़ने का भी बहुत शौक है। उसने ढेर सारी शार्ट स्टोरीज लिखी हैं। उसे फंतासी लिखना पसन्द है। वह उपन्यास और कहानियाँ पढ़ना पसन्द करती है। साथ ही प्रेरक पुस्तकें पढ़ने में भी रुचि रखती है। आपको यह जानकर ताज्जुब होगा कि उसने अब तक तीन उपन्यास भी लिख दिए हैं। कक्षा 7 में जाने के बाद तीसरा उपन्यास लिख दिया। इसे प्रकाशक ने हाथों हाथ छाप भी दिया। इसका नाम है, क्रॉनिकल्स ऑफ़ इल्यूजंस : द ब्लू वाइल्ड।

जीते कई पुरस्कार

तेजतर्रार, मेहनती और प्रतिभाशाली नालिया ने अब तक कई पुरस्कार जीते हैं। लेकिन वह कहती है कि हमें पुरस्कारों को कभी भी सफलता या खुशी का मानक नहीं समझना चाहिए। मैंने कुछ पुरस्कार जीते हैं लेकिन वे मुझे परिभाषित नहीं करते। न ही वे पुरस्कार मेरा सच्चा परिचय हैं। मेरा सबसे प्रिय पुरस्कार स्कूल के नेशनल साइंस फेयर में मिला अवार्ड है। यह पुरस्कार मुझे मिडिल स्कूल की लड़कियों को सेल्यूलर स्क्रीन टाइम की कटौती करने की प्रेरणा देने के लिए मिला था।

प्रेरणा के स्रोत

इतना कुछ करने के लिए आपको ऊर्जा और प्रेरणा कहाँ से मिलती है? इस प्रश्न के उत्तर में नालिया का कहना है– "मेरे कई मेंटर हैं जो मुझे लगातार प्रेरित करते हैं। मैं एक विशेष प्रोग्राम का हिस्सा हूँ जिसका नाम है– द नॉलेज सोसायटी। इसके अलग–अलग शहरों में अलग–अलग निर्देशक हैं। वे प्रतिभागियों को मार्गदर्शन करते हैं। मेरे पिता भी मेरे रोल मॉडल हैं। उन्होंने मुझे काफी सपोर्ट किया है। साथ ही मेरी बड़ी बहन भी मुझे बहुत उत्साहित करती है।

भविष्य की योजना

नालिया की आगे चलकर एक नया सोलर पैनल बनाने की योजना है। साथ ही वह ऐसा बायोप्लास्टिक भी बनाने की राह पर है जो पर्यावरण के लिए नुकसानदायक नहीं होगा। इसके अलावा वह अपने उपन्यास की अगली कड़ी लिखने, बच्चों के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और नैनो टेक्नोलॉजी जैसे विषय पर पुस्तक शृंखला लिखने की भी योजना बना चुकी है।

शिखरचन्द जैन
कोलकाता (प.बंगाल)

घमंडी गोलू

एक तो करेला और दूसरे नीम चढ़ा, ठीक वही बात थी हाथी के शरारती बच्चे गोलू के साथ। एक तो पहाड़ जैसा भारी–भरकम शरीर, ऊपर से बददिमाग और बेहद घमंड़ी। अपने आगे किसी को कुछ समझता ही नहीं था वह। अपने विशाल शरीर और अपनी ताकत का बहुत ज्यादा घमंड़ था उसको। जंगल तो सभी का होता है। कीड़े–मकोड़ों, पक्षियों और छोटे जानवरों से लेकर बड़े जानवरों तक सभी को वहाँ आराम से रहने का समान अधिकार प्राप्त है। लेकिन गोलू हाथी ऐसा नहीं मानता था।

वह अपने आपको सभी से अलग और विशेष समझता था। कीड़ों और छोटे कमजोर जानवरों को सताने में उसे बहुत मजा आता था। रास्ते चलते जो भी जानवर मिल जाय उसको वह परेशान जरूर करता था। उसका भारी–भरकम शरीर देखकर सुन्दर वन के सारे जानवर उससे बहुत भय खाते थे, और उसकी बदतमीजी को चुपचाप सहन कर लिया करते थे।

सुबह का समय था, सुन्दर वन में ठंडी–ठंडी हवा चल रही थी। लाल चींटियों का एक समूह कतार बाँधे भोजन की तलाश में रास्ते के किनारे–किनारे चला जा रहा था। सामने से आ रहे गोलू की निगाह उन पर पड़ी तो उसके मन में शरारत सूझी। चींटियों के पास अपनी सूँड ले जाकर उसने जोर की फूँक मारी। बेचारी चींटियाँ उछल कर इधर–उधर छितरा गयीं। किसी का हाथ टूटा, किसी का पैर, किसी के सिर में चोट लगी तो किसी की पीठ में। बेचारी बहुत सारी चींटियाँ तो मर भी गयीं।

''हाथी दादा! हमने आपका क्या बिगाड़ा था जो आपने हमारे साथ ऐसा गलत व्यवहार किया। हमने माना कि आप के आगे हमारी कोई औकात नहीं है। लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं कि आप हमें जीने भी नहीं देंगे। छोटे और कमजोर को ऐसे सताना कोई अच्छी बात है क्या?'' एक चींटी ने हिम्मत कर के कहा।

''अरी बेवकूफ, जब तुम को पता है कि मैं रोज सुबह इसी समय इसी रास्ते मैं नहाने के लिए जाता हूँ तो तुम मेरे रास्ते से निकली ही क्यों? अभी तो मैंने सिर्फ जरा सी फूँक मारी है तो यह हाल हो गया। अगर अपने पैर से कुचल दूँ तब तो तुम लोगों का कचूमर ही निकल जाएगा।'' गोलू आँखें तरेरते हुए बोला।

''रास्ता तो सभी का होता है गोलू दादा। यह कोई आपका अकेले का तो है नहीं। फिर हम तो चुपचाप एक तरफ किनारे–किनारे चली जा रही थीं।'' दूसरी चींटी बोली।

''अबे चल, बहुत बढ़–बढ़ कर बात न कर। बड़ी आयी मुझे शिक्षा देने वाली। अभी दूसरी फूँक मारूँगा तो जो थोड़े बहुत तुम बची हो न, उनका भी पता नहीं चलेगा।'' गोलू ने डाँटते हुए कहा और झूमता हुआ आगे बढ़ गया।

नहाने के बाद गोलू भोजन के लिए पीपल के पेड़ के पास गया और अपनी सूँड उठाकर पीपल के पत्ते खाने लगा। पीपल की जड़ के पास एक चूहा और एक चुहिया टहल रहे थे। गोलू को देखा तो वे दोनों पीपल की जड़ में बने अपने बिल के अन्दर घुस गए। गोलू ने उन दोनों को बिल में घुसते देख लिया था। तत्काल उसके मन में शरारत सूझी। पेट भर पत्ते खा चुकने के

बाद वह पानी पीने के लिए तालाब के पास गया। पानी पीकर लौटते समय उसने अपनी सूँड में ढेर सारा पानी भर लिया और चूहे के बिल के अन्दर पिचकारी की तरह ड़ाल दिया। बिल के अन्दर बाढ़ आ गयी। वह तो गनीमत थी कि चूहे ने अपने बिल से निकलने का एक दूसरा रास्ता भी बना रखा था। अपने परिवार सहित वह दूसरे रास्ते से निकल कर भागा। वरना उस दिन वे सारे पानी में डूब कर मर ही गए होते।

सुन्दर वन में बरगद का एक बहुत पुराना पेड़ था। उस पर अनेक पक्षी अपना घोंसला बनाकर रहते थे। एक दिन उधर से निकलते समय गोलू ने पक्षियों की चहचहाहट सुनी तो उसका ध्यान उस ओर गया। फिर तो उसने अपनी सूँड से पकड़ कर बरगद की एक डाल को इतनी जोर से हिलाया कि उस पर बने बेचारे पक्षियों के घोंसले जमीन पर आ गिरे। उनमें से कई घोंसलों में अंड़े थे जो जमीन पर गिर कर फूट गए। पक्षी चीखते रहे, चिल्लाते रहे लेकिन गोलू पर कोई असर नहीं हुआ। वह हा..हा..हा..हा कर के हँसता रहा उसके बाद अपनी मस्ती में झूमता हुआ आगे बढ़ गया।

लेकिन जो जैसा करता है वैसा भरता भी है और बुरे काम का नतीजा तो बुरा होता ही है। सो गोलू के साथ भी वैसा ही हुआ। एक दिन वह सुन्दर वन में घूमते–घूमते काफी दूर निकल गया था। देर शाम को जब अपने घर लौटने लगा तो वह रास्ता भटक गया। भटकते–भटकते रात हो गयी। अँधेरे में वह बबूल वन की तरफ जा पहुँचा। वहाँ चारों तरफ बबूल के काँटे बिखरे हुए थे। गोलू के पैरों में काँटे धँस गए। काँटे धँसे तो वह अँधेरे में इधर–उधर भागने लगा। लेकिन जितना ही भागता था उसके पैर में काँटे उतने ही अधिक धँसते जा रहे थे। आखिर वह पस्त होकर एक जगह गिर पड़ा और उसके पूरे शरीर में काँटे धँस गए। उस समय तक सारे पक्षी अपने घोंसलों में और सारे जानवर अपनी माँदों में जा चुके थे। रात के समय निकलने वाले जानवर भी बबूल वन की तरफ नहीं आया करते थे। इसलिए गोलू वहाँ जमीन पर पड़ा–पड़ा सारी रात चिंघाड़ता रहा लेकिन उसकी मदद के लिए कोई भी नहीं आया।

सवेरा हुआ तो उधर से उड़ती जा रही छुटकी गौरैया ने गोलू को जमीन पर पड़े कराहते देखा। उसने भाग कर दूसरों को बताया तो एक–एक कर के सारे पक्षी और छोटे, बड़े कई जानवर वहाँ जुट आए। उन सबको देख गोलू रोने लगा और मदद के लिए गुहार लगाने लगा।

''क्यों भाई गोलू जी, तुम तो सुन्दर वन के सबसे बड़े और बलवान जानवर हो। हम छोटे लोग तुम्हारी भला क्या मदद कर सकते हैं ?'' गप्पी गीदड़ हँसते हुए बोला। ''भैया मैं बहुत कष्ट में हूँ। मेरी हँसी ना उड़ाओ। अपने घर का रास्ता भूल कर मैं इधर आ गया था। मेरे सारे शरीर में काँटे धँस गए हैं। बहुत दर्द हो रहा है। चाहे जैसे भी हो इन काँटों को निकालो वरना मेरी जान चली जाएगी।'' गोलू ने रोते–रोते कहा।

''चलो, चलो। तुमने हम लोगों को बहुत परेशान किया है। अब अपने किए की सजा भुगतो तुम।'' कल्लू लंगूर बोला।

''साथियो, चाहे जैसा भी हो गोलू आखिर हमारे सुन्दर वन परिवार का ही सदस्य है। इस मुसीबत में हमें इसकी मदद करनी चाहिए।'' चुनकू हिरन ने वहाँ एकत्र जानवरों और पक्षियों से कहा। नेक दिल चुनकू सभी के सुख–दुःख में मदद किया करता था इसलिए जंगल के सारे जानवर उसकी बहुत इज्जत करते थे। जब चुनकू ने गोलू की मदद करने की बात कही तो सभी पशु–पक्षी उसकी बात मान गए।

चील, बाज, गिद्ध, कठफोड़वा आदि पक्षियों ने अपनी चोंच से खींच कर गोलू के शरीर में धँसे सारे काँटे निकाल दिए। उसके बाद बन्दर, भालू, रीछ और गैंड़े जैसे कई जानवर आए और उन सबने गिरे पड़े गोलू को सहारा देकर खड़ा कर दिया।

''लेकिन मैं तो अपने घर का रास्ता ही भूल गया हूँ। अब घर कैसे जाऊँगा?'' दर्द से कराह रहे गोलू ने कहा। ''परेशान न हो। मैं आगे–आगे उड़ता चल रहा हूँ। तुम मेरे पीछे–पीछे आओ। मैं तुमको तुम्हारे घर तक पहुँचा दूँगा।'' सामने डाल पर बैठा कबूतर बोला। फिर तो गोलू ने सारे जानवरों को धन्यवाद दिया, अपनी शरारतों के लिए माफी माँगी और लँगड़ाता हुआ कबूतर के पीछे–पीछे चल पड़ा।

अखिलेश श्रीवास्तव चमन
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

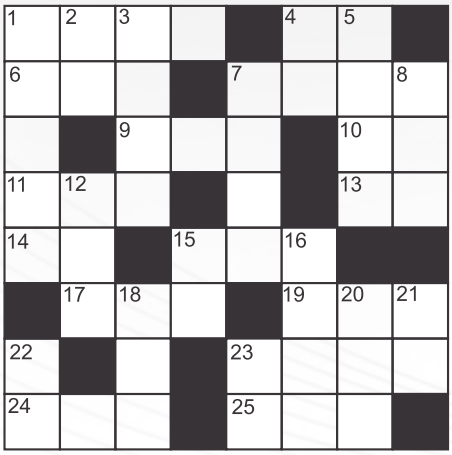

वर्ग पहेली

– परितोष पालीवाल
कांकरोली (राजस्थान)

बाएँ से दाएँ

1. विद्या की देवी, माँ शारदा (4)
4. अँधेरा (2)
6. पानी में रहने वाला उभयचर जन्तु, लेकिन (3)
7. आग्रह, मान मनोव्वल (4)
9. देव वाणी, एक प्राचीन भारतीय भाषा (3)
10. बरगद (2)
11. समुद्र, जलधि (3)
13. पेड़ का जड़ से ऊपर एवं शाखाओं से नीचे वाला भाग, खिंचा हुआ (2)
14. औषधि, बीमारी के उपचार हेतु खुराक (2)
15. विचारना, चिन्तन करना (3)
17. स्थिर होना, द्रव का ठोस बनना (3)
19. देश (3)
23. हरियाणा का एक शहर जहाँ इब्राहिम लोदी एवं बाबर के मध्य युद्ध हुआ (4)
24. आशंका, बत्ती आदि चालू करने का उपकरण (3)
25. स्तर से गिरना (3)

ऊपर से नीचे

1. समानता को मानने वाला विचार / वाद (3,2)
2. नस, रक्त वाहिनी (2)
3. व्याकरण में संधि का एक प्रकार (2,2)
4. दुबला, पतला, जिसकी सांद्रता कम हो (2)
5. हाथी को चलाने वाला (4)
7. वोट डालना, मत देना (2,2)
8. तोते की तरह दोहराना, कंठस्थ करना (3)
9. मिलना, दो या अधिक पक्षों द्वारा किसी विवाद के समाधान हेतु किसी प्रस्ताव पर सहमत होना। (2)
12. परम्परा, रीति (3)
15. इनकार करना, नहीं, कुछ करने से रोकना (2)
16. मक्खन, मसका, लौनी (4)
18. पानी भरने का मिट्टी का पात्र, घड़ा (3)
20. गर्मी, ताप, ऊष्णता (3)
21. झुका हुआ (2)
22. अंगूर का सूखा हुआ रूप (2)

उत्तर इसी अंक में

कवि रहीम कहते हैं...

कि जैसी इस देह पर पड़ती है, सहन करनी चाहिए, क्योंकि इस धरती पर ही सर्दी, गर्मी और वर्षा पड़ती है। अर्थात जैसे धरती शीत, धूप और वर्षा सहन करती है, उसी प्रकार शरीर को सुख–दुःख सहन करना चाहिए।

जैसी परे सो सहि रहे, कहि रहीम यह देह,
धरती ही पर परत है, सीत घाम औ मेह।

समय के मात्रक

समय अवधि को नापें किससे,
जरा राम बतलाओ तुम।
सोच समझकर बोलो भैया,
क्यों बैठे हो तुम गुमसुम।

माह, दिवस में नापें इसको,
और नापते वर्षों में।
अब तो प्यारे राम बताओ,
बात ना टालो परसों में।

सेकंडों में इसे नापते,
और नापते मिनटों में।
एक इकाई और बताएँ,
इसे नापते घंटों में।

समय को जिसने है जाना ,
वह मंजिल पा जाता है।
जो समय को भुला बैठा,
तुरत मात खा जाता है।

डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव
जालौन (उत्तर प्रदेश)

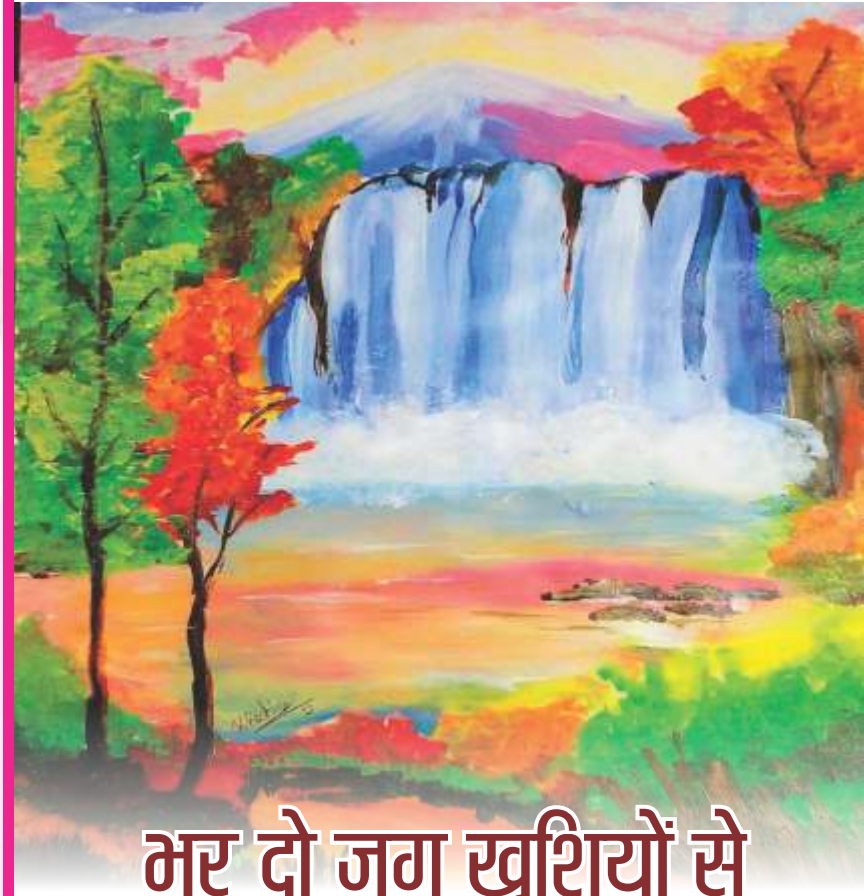

भर दो जग खुशियों से

पता नहीं धरती के ऊपर,
किसने यह आकाश बनाया?
नहीं जानता अब तक कोई,
सूरज चाँद कहाँ से आया?

तारों को भी नहीं पता है,
वे अम्बर में आये कैसे।
प्राण वायु कैसे मिलती है,
बिना दिए ही रुपये पैसे।

इतने ऊँचे–ऊँचे पर्वत,
ढोकर कौन कंधे पर लाया ?
हरे–भरे पेड़ों से भू को,
किसने आच्छादित करवाया?

किसने नदियाँ किसने झरने,
सर सागर किसने हर्षाए।
कहाँ–कहाँ लेटे सोये हैं,
भगीरथ भी गिन न पाए।

कैसा यह संसार हमारा,
कैसा है निर्माता इसका?
असली मालिक कौन यहाँ का,
नहीं पता यह जग है किसका?

इतना सब कुछ होने पर भी,
इस धरती पर विपदा आई।
विपदा आने का कारण हम,
इनसानों की लापरवाही।

हे जल थल अम्बर के स्वामी,
करो नमन स्वीकार हमारा।
सबके ही दुःख दर्द मिटा दो,
भर दो जग खुशियों से सारा।

प्रभुदयाल श्रीवास्तव
छिन्दवाड़ा (मध्य प्रदेश)

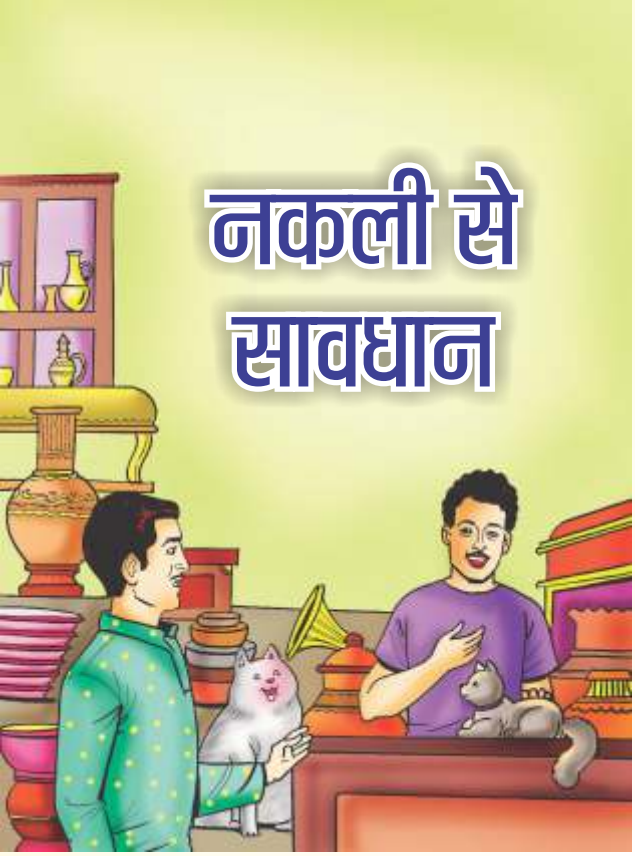

नकली से सावधान

पात्र परिचय : (1) दुकानदार जादूगर जैसा पहनावा, मोटे लैंस का चश्मा (2)दुकानदार के नौकर, 8–10 वर्ष के बच्चे जिन्होंने बिल्ली और कुत्ते के मुखौटे पहन रखे हैं। (3) नकली पुलिस : (पुरुष), (4) असली पुलिस (लड़की) (5) ग्राहक 1 : लड़का (6) ग्राहक 2 : लड़की (उम्र 7–8 वर्ष)

(परदा उठता है। एंटीक चीजों की एक दुकान। यहाँ लकड़ी, चाँदी, पीतल के बहुत सारे पुराने सामान रखे हैं। एक बोन्साई का पौधा है, एक छाता है, एक ढोलक है, एक पुराना टूटा टीवी है।)

मालिक : (दर्शकों की तरफ देखते हुए) ये दुकान पिचहत्तर साल, ग्यारह महीने, ग्यारह दिन पुरानी है। हम पुरानी से पुरानी चीजें खरीदते और बेचते हैं।

(सामानों के पीछे से कुत्ते और बिल्ली सामने आते हैं।)

कुत्ता–बिल्ली : नमस्ते! हम है कुत्ता भाई, और बिल्ली भाई (दोनों एक दूसरे की तरफ इशारा करते हैं) ये दुकान नहीं जादूनगरी है। एक–एक सामान की अपनी अलग कहानी है।

मालिक : चलो–चलो, काम पे लग जाओ। चीजों से धूल साफ करो। ग्राहक आते होंगे। काम करो।

कुत्ता : बिल्ली भाई! तुम ऊपर से फटका मारो।

बिल्ली : कुत्ता भाई! तुम उधर से झाड़ू चलाओ।

(तीनों काम करने का नाटक करते हैं। बैक ग्राउण्ड में म्यूजिक चलता है।)

ग्राहक 1 का प्रवेश

मालिक : आइए, फरमाइए!

ग्राहक 1 : यहाँ जादू का सामान मिलता है?

मालिक : हाँ मिलता है।

ग्राहक 1 : क्या–क्या मिलता है?

(सामान के पीछे से बिल्ली और कुत्ता निकल कर आते हैं और नाचते–उछलते हुए चीजों के नाम बताते हैं।)

बिल्ली : जादू का चिराग, लंगड़े भूत की जुराब।

कुत्ता : गाने वाली किताब, उड़ने वाली दरी।

बिल्ली : अंधेरे में देखने वाला चश्मा, सुरीला हुक्का।

कुत्ता : लड़ाकू सैनिक, पढ़ाकू बूढ़ा, सूरमे वाला चूहा।

ग्राहक 1 : रुको–रुको।

मालिक : बोलो क्या दूँ?

ग्राहक 1 : ये बिल्ली और कुत्ते भी बिकाऊ हैं?

बिल्ली : नहीं... नहीं... हम टिकाऊ हैं!

मालिक : मगर, इन्हें किराए पे ले जा सकते हो। जरा महँगे हैं ये, मगर बड़े काम के हैं।

ग्राहक 1 : अच्छा, जरा इनकी खासियत तो बताना!

मालिक : ये बिल्ली नहीं, बिल्ला भाई है। ये

हलवाई है। खाना भी पकाता है। मगर सब कुछ जलाता है, गलाता है और खुद खा जाता है... और भाग कर यहाँ लौट आता है।

ग्राहक 1 : नहीं चाहिए और कुत्ता?

मालिक : हाँ बेटा! इसे ले जाओ! ये तुम्हें पढ़ा सकता है।

ग्राहक 1 : अच्छा! ये टीचर कुत्ता है! ये क्या पढ़ा सकता है?

मालिक : गड़बड़ गणित!

ग्राहक 1 : गड़बड़ गणित? वो क्या होता है?

मालिक : इससे कोई सवाल पूछ के देखो?

ग्राहक 1 : कुत्ता भाई, पाँच चौके कितने?

कुत्ता : अठारह! 2 परसेंट कमीशन काट के!

ग्राहक 1 : बाप रे ऐसा गणित? और 100 से 50 घटाओ तो?

कुत्ता : 31 से 40 तक कुछ भी!

ग्राहक 1 : इतना खतरनाक ज्ञान कहाँ से सीखा, कुत्ते जी?

कुत्ता : खुद का आविष्कार है!

मालिक : पैक कर दूँ?

ग्राहक 1 : बिलकुल नहीं! कुछ और देखने दो।

(एक और ग्राहक लड़की का प्रवेश)

ग्राहक 2 : अंकल–अंकल, मुझे उड़ने वाला झाड़ू चाहिए।

मालिक : हैरी पॉटर वाला?

ग्राहक 2 : हाँ...हाँ... वहीं वाला!

मालिक : अरे बेटी वो तो बिक गया। कुछ और ले लो।

ग्राहक 2 : गायब ब्रांड का ओवरकोट है?

मालिक : छू–मंतर बुरका! जिसे पहनने के बाद तुम्हें कोई नहीं देख सकता?

ग्राहक 2 : हाँ... हाँ..., वही!

मालिक : है ना, उधर देखो पाँच सेट लटके हैं हैंगर में।

ग्राहक 2 : कहाँ? मुझे तो दिखाई नहीं दे रहा।

मालिक : कैसे दिखाई देगा? अदृश्य शक्ति यानी गायब मंतर मार के इन्हें बनाया गया है।

ग्राहक 2 : लेकिन... दिखाई नहीं देगा, तो पहनूँगी कैसे?

मालिक : महसूस करके! ये देखो (हाव भाव से दिखाता है) मैंने हैंगर से एक बुरका यानी ओवर कोट उतारा, इसे पैक किया और बैग में डाला। घर ले जाओ। जब गायब होने का मन हो, पहन लो। फिर उतार कर सँभाल कर रख दो। तुम्हें कोई नहीं देख पाएगा। मगर तुम सबको देख सकोगी।

ग्राहक 1 : अरे वाह! ये तो बड़े काम की चीज है। कितने की है?

मालिक : वैसे तो अनमोल है! मगर मैं बेचता हूँ मिट्टी के मोल। सिर्फ हजार रुपए। आज का स्पेशल रेट।

ग्राहक 1 : अच्छा मुझे भी एक चाहिए।

ग्राहक 2 : एक मुझे भी!

मालिक : लेकिन बच्चो, इसे पहन कर कोई बुरा काम नहीं करना। चोरी–चकारी या सुपर मैन गिरी से दूर रहना।

ग्राहक 1 : ठीक है।

(तभी एक पुलिस वाले का प्रवेश)

पुलिस (नकली): नो–नो–नो! कुछ भी ठीक नहीं है।

मालिक : अरे बाप रे!

पुलिस(नकली) : आज रंगे हाथ पकड़े गए। नकली माल बेचते हो और बच्चों को बेवकूफ बनाते हो।

ग्राहक 2 : क्या मतलब! यहाँ सब कुछ नकली है?

कुत्ता, बिल्ली : (मुखौटे उतारते हुए) हाँ, हम भी!

पुलिस(नकली) : मैं तुम सबको गिरफ्तार करता हूँ और और....

(असली पुलिस वाले का प्रवेश, हथकड़ी के साथ, रिवॉल्वर तानते हुए)

असली पुलिस : और मैं तुमको गिरफ्तार करता हूँ। तुम नकली पुलिस।

पुलिस (नकली): मैं नकली नहीं हूँ!

असली पुलिस : अच्छा! तो नकली पिस्तौल क्यों? नकली वर्दी क्यों? हाथ बढ़ाओ! (हथकड़ी लगाती है)

मालिक : दरोगा जी मुझे माफ कर दो!

असली पुलिस : दरोगा नहीं, इंस्पेक्टर कहो! दुकान बन्द करो और थाने चलो। और मेरे प्यारे ग्राहक भाइयो, बहनो! पैसे लुटाने का इतना शौक है तो पैसे कमाना भी सीख लो। कम से कम उस पैसों की कद्र तो करो, जो तुम्हारे माता–पिता ने मेहनत से कमाया है।

कुत्ता, बिल्ली : और हम क्या करें?

असली पुलिस : तुम इनसान बनने की कोशिश करो। नकली नहीं असली बनो।

(परदा गिरता है)

समीर गांगुली
मुंबई (महाराष्ट्र)

जरा हँस लो

एक कंजूस जौहरी टैक्सी में बैठकर दुकान जा रहा था। अचानक टैक्सी ड्राइवर बोला- साहब, टैक्सी के ब्रेक फेल हो गए हैं।

जौहरी बोला- अरे ! जल्दी से पहले टैक्सी का मीटर तो बन्द कर दे।

दिमागी कसरत

निम्नलिखित शब्दों में प्रत्येक के तीन अक्षर गायब है। अच्छी बात यह है कि यह तीनों अक्षर समान है। आप अपनी स्मृति व शब्द ज्ञान का उपयोग कर उपयुक्त अक्षर भरें और शब्द को पूरा करें।

(1) M_L_RI_
(2) DI_MI__
(3) _V_R_ST
(4) A_TE_ _A
(5) BA_ _A_E
(6) T_M_RR_W
(7) _WI_ _ER
(8) _U_ _ET
(9) EXH_B_T_ON
(10) _AXI_U_
(11) MI_ _O_
(12) T_ _NAG_
(13) _E_ _ION
(14) PARA__E_
(15) _U__LE

उत्तर इसी अंक में

प्रकाश तातेड़
उदयपुर (राजस्थान)

नमक की कहानी

विवेक खाना खाने लगा तो उसको दाल में कोई स्वाद नहीं आया, फिर उसने दूसरा निवाला भी खाया तब भी कोई स्वाद नहीं आया, उसके पास में ही उसके दादाजी भी भोजन करने जा रहे थे।

"दादाजी आज भोजन में कोई स्वाद ही नहीं आ रहा है।" विवेक ने दादाजी से पूछा। "हाँ बेटा, आज तेरी माँ दाल में नमक डालना भूल गयी है।" दादाजी ने विवेक को बताया। "तो क्या नमक इतनी जरूरी चीज है कि उसके न होने पर पूरा भोजन ही बेकार लग रहा है।" विवेक ने चौंक कर कहा।

टेबल साल्ट– इसमें सोडियम के साथ आयोडिन भी उचित मात्रा में पाया जाता है जो हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। इसको सीमित मात्रा में सेवन किया जाए तो ये कई फायदे करता है लेकिन इसका ज्यादा मात्रा में सेवन करने से हड्डियाँ कमजोर होने लगती हैं।

सेंधा नमक – इस नमक को रॉक सॉल्ट यानी कि व्रत के नमक से भी जाना जाता है। इसमें कैल्शियम, पोटेशियम और मैग्नीशियम की मात्रा सादे नमक की तुलना में काफी ज्यादा होती है। साथ ही यह हमारे स्वास्थ के लिए भी बहुत ही अच्छा होता है।

काला नमक – इस नमक का उपयोग करना हर तरह के लोगों के लिए फायदेमंद होता है। इसके सेवन से कब्ज, बदहजमी, उल्टी आना, पेट दर्द और जी घबराने जैसी समस्याओं से छुटकारा मिल जाता है।

"हाँ बेटे, पहले भोजन कर लो फिर मैं तुमको नमक की कहानी बताता हूँ।" दादाजी ने दाल में अलग से नमक मिलाते हुए कहा। भोजन कर लेने के बाद दादाजी और विवेक दोनों दोनों हॉल में लेट गए और दादाजी ने बोलना शुरू किया। "नमक हमारे जीवन का बहुत महत्त्वपूर्ण पदार्थ है, इसका रासायनिक नाम सोडियम क्लोराइड (NaCl) होता है।

नमक का निर्माण अधिकतर समुद्र के खारे पानी से किया जाता है, इसके लिए समुद्र के किनारे छिछली क्यारियाँ बना दी जाती है, समुद्र का पानी इन क्यारियों में भर जाता है, फिर सूरज की गर्मी से पानी उड़ जाता है और नमक शेष रह जाता है, फिर यही प्रक्रिया दो–तीन बार दोहराई जाती है, ऐसा करने से नमक के बड़े–बड़े ढेले बन जाते हैं फिर उस नमक को इकट्ठा करके कारखानों मे भेज दिया जाता है ताकि फिर नमक को साफ करके थैलियों में पैक करके बाजार तक पहुँचाया जा सके फिर वही नमक तुम्हारी माँ की रसोई से होता हुआ हमारे खाने की थाली में आता है।" दादाजी ने बोलना जारी रखा।

"लगभग 70 प्रतिशत नमक समुद्र के पानी से बनता है, जबकि 25 प्रतिशत कुओं के खारे पानी से और लगभग 5 प्रतिशत नमक साम्भर झील तथा अन्य झीलों के खारे पानी से बनता है, हमारे शरीर में भी नमक की कुछ मात्रा रुधिर में होती है जो हमारे शरीर के विकास के लिए बहुत जरूरी होती है।" दादाजी ने बताया। "तो क्या हमें ज्यादा नमक खाना चाहिए, जिससे हम स्वस्थ रह सकें?" विवेक ने पूछा।

"अरे! नहीं... नहीं...! हमें हर चीज एक सीमा में ही खाना चाहिए, अति तो हर चीज की बुरी होती है, इसी तरह नमक की अधिक मात्रा खाने से हमारा रक्तचाप बढ़ सकता है।" दादाजी ने समझाते हुए कहा। "ठीक है दादाजी।" विवेक ने कहा और बाहर की ओर जाने लगा। "हाँ वो तो ठीक है पर तुम जा कहाँ रहे हो?" दादाजी ने पूछा। "दादाजी! आपने जो इतनी कीमती जानकारी मुझे नमक के बारे में दी है उसे अपने दोस्तों को बताने जा रहा हूँ ताकि उनका भी ज्ञान बढ़ सके।"

नीरज कुमार मिश्रा
पलिया कलां खीरी (उत्तर प्रदेश)

पत्रिकाएँ मुस्कुरा उठी

किताबों की एक दुकान में रखी बच्चों की कई पत्रिकाएँ बच्चों की राह देख रही थी। बार–बार वे रास्ते पर आते–जाते बच्चे और उनके माता–पिता को देख रही थी। वे सोच रही थी– "कोई बच्चा या उसके माता–पिता बड़े प्रेम से हमें खरीदेंगे... तो खूब मजा आएगा। नन्हे पाठक खुशी–खुशी हमें पढ़ेंगे। हम बच्चों को कहानियाँ, कविताएँ, पहेलियाँ सुनाएँगे, उनका ज्ञान वर्धन करेंगें। इस तरह बच्चे हमारे दोस्त बन जाएँगे।"

मगर ऑनलाइन पढ़ाई के कारण ज्यादातर बच्चे किताबों से अधिक मोबाइल में व्यस्त थे। कुछ बच्चे पढ़ते–पढ़ते मोबाइल पर गैम्स या कार्टून में ही समय बिताने लगे थे। किताबों में उनकी रुचि कम होती जा रही थी। यह देख एक बाल पत्रिका ने उदासी के स्वर में कहा– "पहले तो बच्चे हर महीने उत्साह से हमारी राह निहारते। बड़ों के थैलों से निकलकर जब हम बच्चों के हाथों में जाती तो वे खुशी से उछल पड़ते। हम उन्हें कहानियाँ सुनाते। चित्रों द्वारा उनकी मनचाही दुनिया की सैर कराते। मगर अब वे कंप्यूटर और मोबाइल पर ज्यादा समय बिता रहे है।"

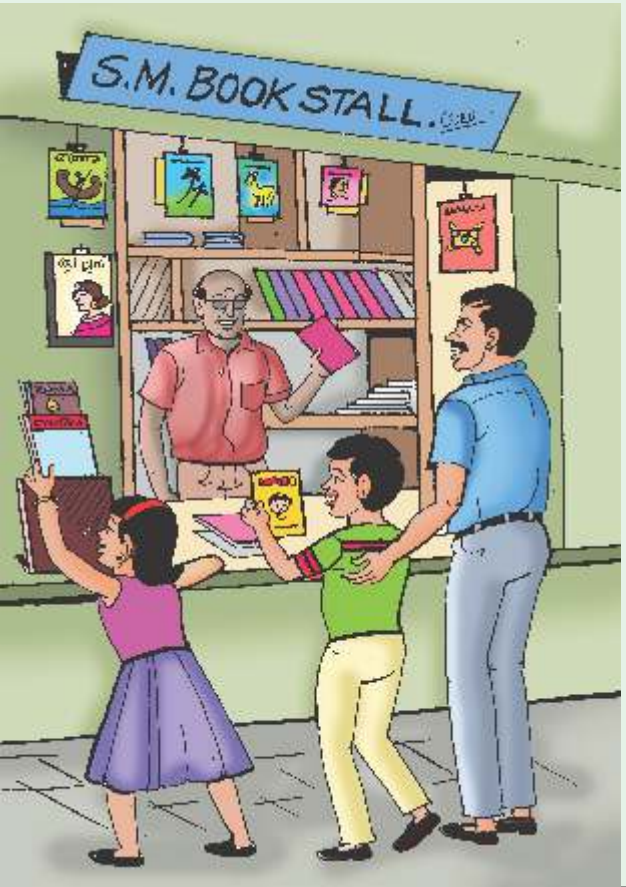

तभी दूसरी पत्रिका ने कहा– "तुमने सच कहा... आजकल बच्चे मोबाइल–कंप्यूटर के साथ ही खुश रहने लगे हैं। वे भी क्या दिन थे... जब हमें खुशी–खुशी खरीदा जाता। बच्चे हमें बड़े चाव से पढ़ते। जिसके पास बाल पत्रिका होती, वह बच्चा मुहल्ले का राजा कहलाता था।"

यह सुनकर एक पारिवारिक पत्रिका बोली– "हाँ, मुझे भी वे दिन याद है। सिर्फ बच्चे ही नहीं, पूरा परिवार किताबों के माध्यम से एकजुट हो जाता। पत्रिकाओं के माध्यम से बच्चे भी एक दूसरे के बहुत अच्छे मित्र बन जाते। सभी बारी–बारी उनकी मनपसन्द कहानियाँ व लेख पढ़ते। उनके बारे में एक दूसरों से चर्चा करते। लोगों के खाली समय में हम ही तो उनके सच्चे मित्र थे।"

तभी एक विज्ञान पत्रिका भी हर्ष से कागज फड़फड़ाते हुए बोली– "मैं तो कहानियों के साथ–साथ बच्चों को विज्ञान, विश्व और सामान्य ज्ञान की बातें भी सुनाती थी। बच्चे मुझसे कई सवाल जवाब करते। मैं उन जिज्ञासु बच्चों को कई नई जानकारी देती।"

उसकी बातों से पहली बाल पत्रिका भी खुशी से उछल पड़ी– "और तुम सबको याद है? जब बच्चे पत्रिका में दिए गए चित्र में सुन्दर रंग भरते तो कैसे दौड़ते हुए दादा–दादी, माता–पिता या दोस्तों के पास जाकर उन्हें दिखाते। तब उनका उत्साह में देखने लायक होता।''

उसके पीछे दूसरी बाल पत्रिका भी बोल पड़ी– "अरे हाँ...। मेरे द्वारा आयोजित चित्र प्रतियोगिता में बच्चे बड़े उत्साह से हिस्सा लेते। मुझे अच्छे चित्र भी भेजते। और जब मैं उनके चित्रों को मेरे पन्नों पर प्रकाशित करती तो वे उत्साह से सबको दिखाते रहते। उनका खुशी वाला चेहरा आज भी मैं याद करती हूँ तो भावविभोर हो जाती हूँ। मुझे फिर से बच्चों के साथ चित्रों का मजा लेना है।..."

एक नन्हीं पत्रिका भी उत्साह से कहने लगी– "हाँ... हाँ...। मजा तो मुझे भी बहुत आता। जब मैं बच्चों

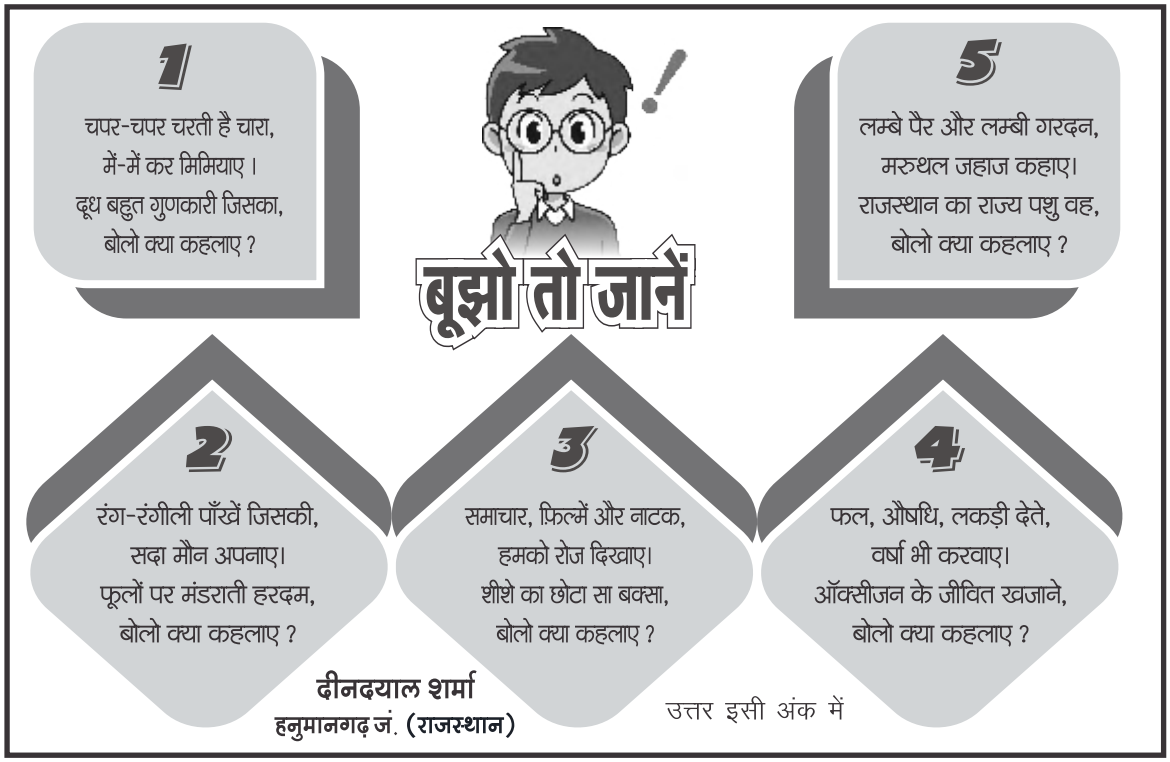

को तरह–तरह की कविताएँ गाकर सुनाती और वे मेरे साथ गाते–गाते नाचने ही लग जाते। वे स्वयं भी अच्छी कविताओं की रचना करके मुझे भेजते। सचमुच, वे बचपन का खूब आनन्द लेते। लेकिन आज कुछ बच्चे फिल्मी गानों पर ज्यादा थिरक रहे हैं। मुझे यह जरा भी पसन्द नहीं है।" कहते हुए पत्रिका ने अपना मुँह बनाया।

इन सब बातों से एक पत्रिका गम्भीर होकर बोली– "बिलकुल। पहले बच्चे पत्रिकाओं में दिए जाने वाले खेल जैसे कि वर्ग पहेली, रास्ता ढूँढो, चित्रों में अन्तर ढूँढो, कहानी बनाओ, वस्तु खोज आदि का आनन्द लेते। उन्हें पत्रिकाओं के दिमागी कसरत वाले खेलो में बहुत रुचि रहती। पर अब कईं बच्चे तो मोबाइल–कम्प्यूटर पर बहुत देर तक वीडीयो गैम्स खेलकर आँखें खराब कर रहें हैं। यह सही नहीं है।"

यह सुन उसकी साथी पत्रिका तुरन्त आगे आकर कहने लगी– "सच कहा। पहेलियाँ सुलझाते समय उनका उलझा हुआ चेहरा देखकर तो कभी–कभी मुझे हँसी आ जाती। जो बच्चा सबसे पहले मेरी पहेलियाँ सुलझाता उसका मान–पान बढ़ जाता। मैं फिर से बच्चों के साथ खेलना चाहती हूँ। पर क्या करें? बच्चे टीवी–मोबाइल पर काम बिना ही बेवजह चिपके रहते हैं।" कहते हुए पत्रिका थोड़ी गुस्सा हो गई।

उनकी बातें सुन एक पत्रिका ने चिन्ता वाली बात कही– "हाँ, पता नहीं क्यों पाठक हमसे दूर होते जा रहे हैं। याद है? कुछ सालों पहले बाजार, बस स्टैन्ड या रेलवे स्टेशन में अखबार की किसी भी दुकान पर हम आसानी से मिल जाते थे। पर अब मोबाइल व इंटरनेट के जमाने में बहुत कुछ बदल गया है। लोग अखबार या किताबें मोबाइल पर ही पढ़ने लगे हैं। और तो और किताबों की दुकानें भी धीरे–धीरे कम होने लगी है। अगर ऐसा रहा तो कहीं बच्चे भी हमें छोड़कर मोबाइल की दुनिया में न चले जाएँ।"

अन्य एक पत्रिका ने भी शिकायत के स्वर में कहा– "बच्चों को मोबाइल–कंप्यूटर के ज्यादा उपयोग से होने वाले नुकसान को समझना चाहिए और पत्रिकाओं से मैत्री करनी चाहिए। पता नहीं वे पहले की तरह हमारे दोस्त बनना चाहेंगे कि नहीं?"

हर हफ्ते बच्चों के लिए कहानी का पिटारा लाने वाला अखबार सभी पत्रिकाओं को सांत्वना देते हुए कहने लगा– "अरे तुम सब इतनी चिन्ता मत करो। हम सदियों से मनुष्यों के साथी रहे हैं। आज भी कई बच्चे और पाठक हमारे मित्र बनना चाहते हैं। बस उन्हें सही तरीके से किताबें–पत्रिकाओं का महत्त्व समझाने की जरूरत है।"

किताबें, पत्रिकाएँ, अखबार बच्चों के बारे में चर्चा कर रहे थे, उसी समय पिताजी के साथ विकी–रीटा घूमने निकले हुए थे। उनकी नजर किताबों की दुकान पर पड़ते ही वे दौड़कर अन्दर गए। दुकान में कई पत्रिकाएँ पड़ी थी। दोनों की नजर उनकी चहेती पत्रिका "बच्चों का देश" पर पड़ी। पत्रिका देखते ही विकी और रीटा खुशी से उछल पडे।

पत्रिका लेते हुए विकी बोला– "पिताजी, मैं इस पत्रिका के नए अंक का ही इंतजार कर रहा था। पत्रिका–किताबें खाली समय में ज्ञान बढाने का उत्तम साधन है।''

रीटा ने विकी की बात का समर्थन करते हुए कहा– "बिलकुल, मुझे किताबें और पत्रिकाएँ पढ़कर बहुत सारी जानकारी मिली है। मेरा सामान्य ज्ञान भी बढ़ा है। इनसे हमारा आत्मविश्वास तो बढ़ता ही है, मगर जीने की सही राह भी मिलती है। पिताजी, इन्हें पढ़–पढ़ तो मैं भी कहानियाँ लिखने सीख गई हूँ।"

विकी–रीटा की बातें सुनकर पिताजी मुस्कुराने लगे। उन्होंने कहा– "बहुत अच्छा! बच्चों को किताबें और बाल पत्रिकाएँ पढ़नी ही चाहिए।"

फिर उन्होंने बच्चों को पत्रिकाएँ खरीद कर दी और उनका हौसला बढ़ाते हुए कहा– "बच्चो, तुम्हारी तरह सभी बच्चे किताबें–पत्रिकाओं का महत्त्व समझ कर उन्हें नियमित पढ़ते रहेंगे तो वे जरूर धैर्यवान, बुद्धिशाली व मानसिक रूप से सशक्त बनेंगे। जीवन में आगे बढ़ेंगे। तुम तो पत्रिकाएँ नियमित पढ़ते ही हो, पर तुम्हारे दोस्तों को भी इस बारे में जरूर बताना।"

बच्चों के हाथ में जाते ही वह पत्रिका खिलखिलाते हुए अन्य पत्रिकाओं को कहने लगी– "देखा? अभी भी विकी–रीटा जैसे कई बच्चे हमें कितना प्यार करते हैं। हमारा परिश्रम कभी व्यर्थ नहीं जाएगा। तुम सब को भी मेरी तरह एक नया दोस्त जरूर मिलेगा। टा...टा...।"

यह सुन अन्य पत्रिकाएँ मुस्कुरा उठी। उनकी आशा दृढ हो गई कि विकी–रीटा की तरह जल्द ही अन्य कई बच्चे भी उनके अच्छे मित्र बन जाएँगे।

विजय जी. खात्री (वलेरा)
डीसा (गुजरात)

आओ पढ़ें : नई किताबें

पुस्तक का रोचक रहस्यपूर्ण शीर्षक पढ़कर बाल मन अवश्य ही पढ़ने को लालायित होगा। इस शीर्षक से रचित एक श्रृंखलाबद्ध कहानी का यह आठवाँ खंड है। जुगनू, परी, चंदामामा, बच्चे कबूतर मिलकर कहानी की रचना करते हैं। रंगीन 22 पृष्ठों की पुस्तक में चित्रों की अधिकता है जो मोहक लगती है। कहानी में सहज प्रवाह है। सरल भाषा व संवाद से कहानी का विकास हुआ है। अन्त में एक कविता के माध्यम से बच्चों को पारिवारिक रिश्ते समझाये गये हैं। लेखक प्रबोध कुमार गोविल की यह पुस्तक बाल मन को पसन्द आएगी, ऐसा विश्वास किया जा सकता है।

पुस्तक का नाम : मंगल ग्रह के जुगनू–8
लेखक : प्रबोध कुमार गोविल
मूल्य : 100 रुपए
पृष्ठ : 24
प्रकाशक : अनन्त पब्लिकेशन, जयपुर (राज.)
संस्करण : 2021

23 अप्रैल

WORLD BOOK DAY

हमारी सबसे अ

किताबें बच्चों की सबसे अच्छी दोस्त होती हैं, क्योंकि वे बिना कहे बहुत कुछ समझा देती हैं। उनका मनोरंजन करती हैं और अच्छे–बुरे का ज्ञान सहज ही करा देती हैं। उनसे दोस्ती करने के लिए उन्हें पढ़ना भी जरूरी है। उनके साथ ज्यादा वक्त बिताना जरूरी है। किताबें विरासत का ख़जाना, संस्कृति, ज्ञान की खिड़की, संवाद का माध्यम होती हैं।

ऐसे हुई शुरुआत

जब किताबें हम सबके जीवन का इतना महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं तो विश्व पुस्तक दिवस मनाना भी अनिवार्य था। किताबों से पाठक का जुड़ाव हो, इसको मनाने के पीछे यही मूल उद्देश्य था। यह भी कहा जाता है कि मीगुएल डी सरवेंटस नाम से सबसे प्रसिद्ध लेखक को श्रद्धांजलि देने के लिये स्पेन के विभिन्न किताब बेचने वालों के द्वारा वर्ष 1923 में पहली बार 23 अप्रैल को विश्व पुस्तक दिवस मनाने का फैसला किया गया। उसके बाद यूनेस्को द्वारा 1995 में पहली बार विश्व पुस्तक दिवस 23 अप्रैल को मनाए जाने की घोषणा हुई।

आज के समय में इंटरनेट और सोशल मीडिया के प्रति बढ़ती लोगों की रुचि के कारण पढ़ने की आदत छूटने लगी है। किताब की बजाय गूगल से जानकारी एकत्र करना ज्यादा सरल माना जाने लगा है। लेकिन इसका असर दिमाग के साथ–साथ आँखों पर भी होता है। इसी कारण पुस्तकों के प्रति लोगों में आकर्षण पैदा करने की आवश्यकता महसूस हुई। तब यूनेस्को ने किताबों और मनुष्यों के बीच बढ़ती दूरी को पाटने के लिए 'विश्व पुस्तक दिवस' मनाना तय किया।

23 अप्रैल को विश्व साहित्य के लिए प्रतीकात्मक तिथि के रूप में जाना जाता है। ऐसा माना जाता है कि साल 1616 में इसी तारीख को सर्वांतीज, विलियम शेक्सपियर एवं इन्का गर्सिलासो का निधन हुआ था। इसी दिन कुछ अन्य साहित्यकारों

किताबें करती हैं बातें

बीते जमाने की दुनिया की, इनसानों की

किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं
किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
परियों के किस्से सुनाते हैं
किताबों में रॉकेट का राज है
किताबों में साइंस की आवाज है
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान का भंडार है
क्या तुम इस संसार में नहीं जाना चाहोगे?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।

सफ़दर हाशमी

च्छी दोस्त हैं किताबें

का जन्म और कुछ की मृत्यु भी हुई जिनमें मौरिस द्रुओन, हल्दोर लैक्सनेस, व्लादिमीर नबोकोव आदि शामिल हैं। भारत सरकार ने 2001 से इस दिन को विश्व पुस्तक दिवस के रूप में मनाने की मान्यता दी। किताबों के बीच असली खुशी और ज्ञान की खोज करने तथा किताबें पढ़ने के लिए युवाओं को प्रोत्साहित करने के लिए यह दिवस मनाया जाता है। हर वर्ष पुस्तक दिवस एक थीम के साथ मनाया जाता है।

अलग-अलग ढंग से मनाते हैं

कई लोग इस दिन अपनी पसन्दीदा पुस्तक खरीदकर और उसे पढ़कर इस मनाते हैं। बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित करने में विश्व पुस्तक दिवस एक बड़ी भूमिका अदा करता है। शिक्षक, लेखक, प्रकाशक, लाइब्रेरियन, निजी और सरकारी शैक्षणिक संस्थानों, एनजीओ, मास मीडिया आदि के द्वारा खासतौर से विश्व पुस्तक दिवस मनाया जाता है। यूनेस्को राष्ट्रीय परिषद, यूनेस्को क्लब, केंद्रीय संस्थान, पुस्तकालय, स्कूलों द्वारा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। किताबों का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है, इसके बारे में बताने के लिए 'विश्व पुस्तक दिवस' पर शहर के विभिन्न स्थानों पर सेमिनार आयोजित किए जाते हैं। पुस्तकालयों में विचार गोष्ठियाँ आयोजित की जाती हैं।

इस दिन यूनेस्को और इसके अन्य सहयोगी संगठन आगामी वर्ष के लिए 'वर्ल्ड बुक कैपीटल' का चयन करते हैं। इसका मकसद यह होता है कि अगले एक साल के लिए किताबों से जुड़े कार्यक्रम आयोजित हों। इसका उद्देश्य यह संदेश फैलाना होता है कि किताबें हमारे भविष्य की मार्गदर्शक होती हैं, इसलिए इनसे हमेशा नाता बनाए रखना चाहिए। इस दिन पुस्तक प्रदर्शनियों का आयोजन भी किया जाता है।

बच्चों के लिए कुछ खास किताबें

हिंदी में अमर चित्र कथा, पंचतंत्र, सिंहासन बतीसी, विक्रम बेताल, चंद्रकांता संतति, हितोपदेश, अकबर बीरबल, तेनालीराम, अलीबाबा और चालीस चोर, परियों की कहानियाँ जैसी कुछ किताबें हैं जिन्हें बच्चे पढ़ना पसन्द करते हैं। ये किताबें उन्हें भारतीय संस्कृति की पौराणिक कथाओं से रूबरू करवाती हैं।

आरके नारायण की 'मालगुडी डेज' और रस्किन बॉड की लिखी किताबें भी बच्चे बहुत आनन्द से पढ़ते हैं। गुलजार की पोटली बाबा की, समय का खटोला भी बच्चों में लोकप्रिय है। विदेशी लेखकों की हार्डी बॉयज, हैरी पॉटर, सिंड्रेला, स्नोवाइट, एनिड ब्लाइटन की फेमस फाइव, रोआल्ड डाल की चार्ली एंड द चॉकलेट फैक्ट्री, एलिस इन वंडरलैंड आदि पुस्तकों ने बाल पाठकों के दिल में जगह बनाई है।

किताबों का एक विस्तृत समुद्र है। उसमें डूब कर ज्ञान के मोती निकालना ही हर किसी का लक्ष्य होना चाहिए, खासकर हमारे बच्चों का। उन्हें पढ़कर ही वे अपने जीवन की दिशा और दशा तय कर सकते हैं।

सुमन बाजपेयी
दिल्ली

हमारे संरक्षक सदस्य

श्री उदय मेहता, मुम्बई
श्री भँवरलाल बरड़िया, दुबई
श्री मोहनलाल पींचा, बैंगलोर
श्री शुभकरण सुराणा, जयपुर
श्री पन्नालाल बैद, जयपुर
श्री लक्ष्मीचन्द दूगड़, जयपुर
श्री विमला दूगड़, जयपुर
श्रीमती किरण नोपानी, कोलकाता
श्री कैलाश डागा, जयपुर
श्री दिलीप बैद, जयपुर
श्री नरेश मेहता, जयपुर
श्री शान्तिलाल गोलछा, जयपुर
श्री कुन्दनमल बैद, कोलकाता
श्री दलपत लोढ़ा, जयपुर
श्री रतनलाल बैद, जयपुर
श्री हमीरमल सेठिया, कोलकाता
श्री हीरालाल दुगड़, कोलकाता
श्री बिरधीचन्द गोयल, कोलकाता
श्री सम्पतराम भादानी, कोलकाता
श्री हरखचन्द कांकरिया, कोलकाता
श्री बुद्धमल दुगड़, कोलकाता
श्री पुखराज सेठिया, दिल्ली
श्री हँसमुख भाई मेहता, मुम्बई
श्री रवीन्द्र दस्सानी, सूरत
श्री निर्मल रांका, कोयम्बटूर
श्री भावेश शाह, मुम्बई
श्री सचिन बच्छावत, जयपुर
श्री निकुंज शाह, मुम्बई
श्री घीसूलाल नाहर, जयपुर
श्री डालमचंद सुराणा, कोलकाता
श्री पुसराज बैंगानी, कोलकाता
श्री नरेन्द्र रायजादा, जयपुर
श्री नवरतनमल सुराणा कोलकाता
श्री नथमल सेठिया, अहमदाबाद
श्रीशिवकुमार अग्रवाल, काठमाण्डो
श्री अनिल मल्होत्रा, दिल्ली
श्री प्रतापसिंह दुगड़, कोलकाता
श्री राधेश्याम अग्रवाल, काठमाण्डो
श्रीमती सरोज दुगड़, जयपुर
श्री नोरतमल बोथरा, कोलकाता
श्री शांतिलाल मुणोत, अहमदाबाद
श्री किशनलाल बोथरा, कोलकाता
श्री हंसराज बैंगाणी, कोलकाता
श्री पूनमचंद दुगड़, कोलकाता
श्री प्रमिलकुमार रूंगटा, कोलकाता
श्री सुखराज सेठिया, दिल्ली
श्री भैरूलाल चौपड़ा, अहमदाबाद
श्री श्रीराम चौधरी, कोलकाता
श्री प्रेमसुख बच्छावत, कोलकाता
श्री विकास जैन बरड़िया, कोलकाता
श्री शार्दूलसिंह जैन, कोलकाता
श्री श्रीकान्त लड़िया, कोलकाता
श्रीमती पुष्पा ओ. लढ्ढा, अहमदाबाद
श्री श्रेयांस दुगड़, कोलकाता
श्री राजेशकुमार कोठारी, देवघर
श्री विमल कुमार लाहोटी, कोलकाता
श्री पंकज पारख, रायपुर
श्री विजय बोथरा, कोलकाता
श्री सोहनलाल सेठिया, कोलकाता
श्रीमती पुष्पा बरड़िया, कोलकाता
श्री कैलाशचंद जैन, दिल्ली
श्री नंदलाल टांटिया, कोलकाता
श्रीमती सारिका मालू, सरदारशहर
श्री बिमल नाहटा, गौहाटी
श्रीमती सरोज मरोठी, कोयम्बटूर
श्री तेजकरण सुराणा, दिल्ली
श्री बालचन्द बेताला, सूरत
श्री महेशकुमार शर्मा, कोलकाता
श्री राजकुमार ककरानिया, कोलकाता
श्रीमती गीता प्रकाश जैन, कोलकाता
श्री कन्हैयालाल डूंगरवाल, गौहाटी
श्री माधव बूबना, कोलकाता
श्री विकास मालू, दिल्ली
श्रीमती आशा नीलू टांक, जयपुर
श्री कालूराम धारीवाल, कोलकाता
श्री नरपतसिंह बैद, जयपुर
श्री हनुमानदास सिपानी, कोलकाता
श्रीमती कान्ता श्रीमाल, दिल्ली
श्रीमती प्रतिभा कोठारी, कोलकाता
श्री निर्मल एम. रांका, कोयम्बटूर
श्री गणेश कच्छारा, कांकरोली
श्री सुरेशचन्द्र दक, बैंगलोर
श्री जगजीवन चौरड़िया, कांकरोली
श्री अशोक डूंगरवाल, राजसमन्द
श्री उत्तमचन्द पगारिया, कोल्हापुर
श्री त्रिलोक सिपानी, दमन
श्री नरेन्द्रकुमार तातेड़, मुम्बई
श्री मुकेशकुमार भादानी, तिरुपुर
श्री तनसुखलाल बैद, पटना
श्री कैलाशचंद जैन, दिल्ली
श्री अनिलकुमार चण्डालिया, उधना
श्री महावीरलाल बैद, कोलकाता
श्री पन्नालाल मालू, कोलकाता
श्रीमती मंजू जैन, दिल्ली
श्रीमती विनयकांता दूगड़, गांधी धाम

विनम्र अनुरोध

बालकों में नैतिक उत्थान के लिए संकल्पबद्ध 'बच्चों का देश' मासिक पत्रिका को प्रारम्भ से ही अनेक उदारमना श्रेष्ठीजनों व समाज सेवी बन्धुओं–बहनों का सहयोग 'संरक्षक सदस्यता' के माध्यम से मिलता रहा है, जिससे बाल संस्कार संवर्धन का यह यज्ञ गतिमान है। हमारा सादर निवेदन है कि आप संरक्षक सदस्यता स्वीकार कर इस अनुष्ठान के सहभागी बनें। इस सम्बन्ध में अधिक जानकारी के लिए आप 9829052452 पर सम्पर्क कर अनुगृहीत करावें। इस हेतु प्राप्त राशि पर 80 जी के अन्तर्गत आयकर की छूट का नियमानुसार प्रावधान है।

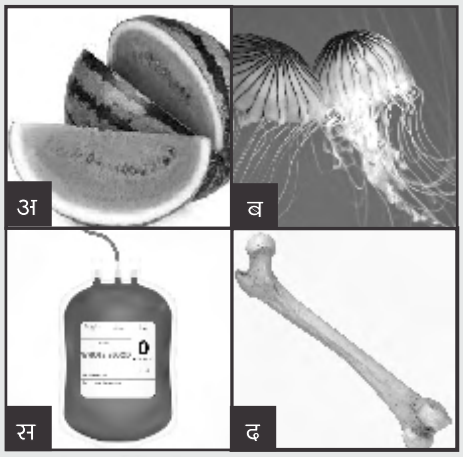

दस सवाल दस जवाब

(1) इन पदार्थों में जल की प्रतिशत मात्रा बताइये।

(2) पानी का रासायनिक अणुसूत्र एवं अणुभार बताइये।

(3) विज्ञान की किस शाखा में जल का अध्ययन करते हैं?

(4) जल किन दो गैसों का मिश्रण है?

(5) विश्व जल दिवस कब मनाया जाता हैं?

(6) किस तापक्रम पर जल उबलने लगता है?

(7) शुद्ध जल के तीन सामान्य गुण क्या है?

(8) पृथ्वी पर कुल जल की मात्रा कितनी है?

(9) मृदु जल (Soft Water) की क्या पहचान है?

(10) जल के चार पर्यायवाची शब्द बताओ।

उत्तर इसी अंक में

जरा हँस लो

- राम– तुम अभी बच्चे हो, इसलिए तुम अँधेरे में अकेले ऊपर जाते हुए डरते हो।

  श्याम– मैं बिलकुल नहीं डरता।

  राम– हाँ, तुम डरते हो, डरपोक हो।

  श्याम– मैं नहीं डरता। तुम मेरे साथ आओ और देख लो।

- दो भाइयों में आपस में लड़ाई हो गई और बिना रात का खाना खाए ही बिस्तर पर सोने चले गए। दस मिनट बाद बड़े भाई ने पूछा– सो गए क्या?

  छोटे ने गुस्से से कहा– मैं तुम्हें नहीं बताऊँगा।

प्रेरक वचन

भाग्य में नहीं, अपनी शक्ति में विश्वास रखो।

❖

ज्ञान हर व्यक्ति के जीवन का आधार है।

❖

बड़े प्रयासों को छोड़कर इस दुनिया में कुछ भी बहुमूल्य नहीं है।

❖

यदि आप मन से स्वतन्त्र हैं तभी आप वास्तव में स्वतन्त्र हैं।

❖

संविधान केवल वकीलों का दस्तावेज नहीं है बल्कि यह जीवन जीने का एक माध्यम है।

❖

अच्छा दिखने के लिए नहीं बल्कि अच्छा बनने के लिए जिओ।

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर

साइकिल

सुमन कुमार
पटना (बिहार)

साइकिल के दो पहिए गोल,
चलती बिन डीजल–पेट्रोल।
दीदी–भैया सभी चलाते,
छात्र चला स्कूल हैं जाते।

कम रुपए में ही मिलती है,
प्रदूषण मुक्त ही चलती है।
गाड़ी बड़ी जाम में फँसती,
पर तू इधर–उधर निकलती।

पैंडिल मारकर इसे भगाओ,
सुन्दर अपनी सेहत बनाओ।
तेरी है मशहूर कहानी,
तू पर्यावरण की निशानी।

दोनों चित्रों में आठ अन्तर ढूँढ़िए

उत्तर इसी अंक में

कैसे बना जंगल?

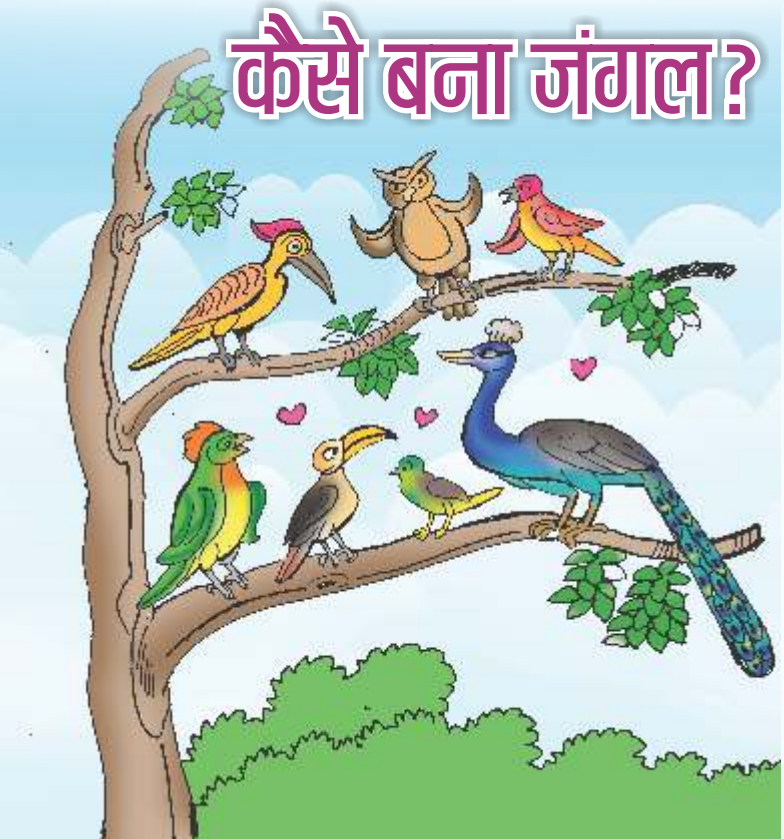

मुझे पैदा हुए कुछ ही दिन हुए है। मैं अपनी माँ के साथ पेड़ के कोटर में रहता हूँ। यह कोटर माँ ने अपनी चोंच से पेड़ में छेद करके बनाया है। मेरी माँ मुझे पेड़ पर चोंच मारना सिखाती है। जैसा माँ ने बताया मैं वैसे ही पेड़ों में छेद करता हूँ। मेरी माँ खुश हो मुझे प्यार करती है। एक दिन मेरी माँ मुझे देवदार के पेड़ पर ले गई। माँ के साथ मिलकर मैं पेड़ की छाल को उखाड़ना सीखने लगा। पत्तों को देख पेड़ के नाम भी मैं समझ गया। मुझे एक शंका हुई तो माँ से पूछा– "इसी पेड़ पर मैंने एक हरे रंग के पक्षी को देखा। वह भी क्या पेड़ को छेद कर सकता है?''

"वह हरे रंग का पंछी तोता है। पेड़ पर जो फल लगते हैं, वह उसे ही खाकर जीता है। हम तो कठफोडवा है, हमारे अलावा कोई भी पक्षी पेड़ में छेद नहीं कर सकता।" माँ बोली। "कठफोड़वा फलों को खाते है क्या?" "संसार में 200 किस्म के कठफोड़वा होते है। उनके जीवन में भी कुछ अन्तर है। कुछ कठफोड़वा फल खाकर जीते हैं। पर अपने देश के दक्षिण में रहने वाले कठफोड़वा पेड़ के कीड़े–मकोड़े, कीट–पतंगे आदि ही खाकर जीवित रहते हैं।'' माँ ने बताया।

ऐसा है तो पेड़ को छेद करने की विशेषता हम कठफोड़वा को ही मिली है। एक बार माँ बाहर गई थी। तो मैं दूसरे पेड़ पर छेद करने की सोचने लगा। जैसे ही मैंने शुरू किया तो कोई आवाज आने लगी। ऐसा लगा दूसरे पक्षी आपस में बात कर रहे हैं। "कीच,कीच! कु...कु... कु... ऐसी आवाज जैसे कोई नाराज हो रहे हैं। जैसे मेरी ओर आँख फाड़ कर देखा। फिर मैं डर गया।

अचानक एक उल्लू पास आकर बैठा। आँखें गोल–गोल घुमाकर गुस्से से बोला– "दोपहर को सोने वाले मेरे बच्चो को शांति से सोने क्यों नहीं दे रहे हो? पेड़ को छेद करना तुरन्त बन्द करो।" उल्लू से डर कर मैं पेड़ के पिछवाड़े जाकर छिपा। मैना, चिड़िया, कौआ, कोयल जैसे अन्य दूसरे पक्षी भी मेरे पास से दूर चले गए। मेरा मन टूटा, मुझे बहुत रोना आया। पेड़ की ऊँची शाखा पर बैठा हरा तोता उड़कर मेरे पास आया और मुझसे बात करने लगा।

"मैं तुम्हारी मदद करता हूँ।'' फिर हम दोनों ने बहुत देर तक जंगल और पेड़ों के बारे में बातें की। जंगल में हुई हँसी–मजाक की बातें उसने मुझे बतायी। उसने मुझसे एक प्रश्न पूछा– "पूरे जंगल में पेड़ कैसे पनपे तुम्हें मालूम है?" थोड़ी देर मैंने सोचा पर जवाब नहीं आया। "कोशिश कर के देखो।" कह कर, तोता उड़ गया।" शाम को मैंने माँ को सारी कहानी सुना दी। माँ ने मुझे खाना खिला सुला दिया।

मैं उस खुशी में तोते ने जो प्रश्न पूछा उसका जवाब माँ से पूछना भूल गया। शाम को मैंने, पेड़ पर एक छोटी चिड़िया को देखा। मैं डरते हुए धीरे–धीरे उसके पास गया। सम्मान के साथ उससे बातें की।

"पूरे जंगल में पेड़ कैसे उगे जरा बताओ?" मैं बोला। "पौधों से पैदा

होता है।" कह कर चिड़िया अपने घोसले में वापस गई। वह भी ठीक है। पेड़ बनने के पहले यह पौधे थे। ऐसा है तो पौधे कहाँ से आए?" अरे.. रे मैं चिड़िया से पूछना भूल गया। जवाब न मालूम होने के कारण परेशान हुआ। पेड़ पर बैठे कौए को देखा। "माफ करना मुझे एक शंका है। पौधे कैसे उगते है?" मैंने पूछा।

कौआ चुप रहा। इतने में एक कोयल उड़कर वहाँ आई। उसके बाद कबूतर, मैना ऐसे कई पक्षी इकट्ठा हो गए। वहाँ आए कबूतर ने कहा– "पेड़ों पर जो फल पकते है, उसे पक्षी खाते हैं। पक्षियो की बीट में वह बीज बाहर निकलते हैं। वे मिट्टी में दब कर उगते हैं।" मुझे आश्चर्य हुआ। इतने छोटे पक्षी और पूरे जंगल में पेड़ उगाने का कारण यही है। आश्चर्य से मैंने उसे देखा। कोयल आगे बोलने लगी– "चारों तरफ बहने वाली हवा बीजों को कई जगहों पर उड़ा ले जाती है।"

मेरी शंका को दूर करने के लिए मैंने कबूतर और कोयल को धन्यवाद दिया। पेड़ पर रहने वाले अन्य पक्षियों के साथ मैंने दिन गुजारा। पक्षियों की सहायता से पेड़ उगते हैं। पेड़ पक्षियों की मदद करते हैं। ठहरने को, रहने को, खाने को सब कुछ पेड़ देते हैं। देवदार वृक्ष पर रहने वाले पक्षी मेरे मित्र बन गए।

उस शाम घर आने पर मैंने माँ को बताया– "माँ! बिना पक्षी के जंगल नहीं होंगे। जंगल नहीं होगा तो संसार नहीं होगा।" माँ ने अपने पंखों को खोल मेरे सिर को सहलाया और फिर मुझे चूमा ।

एस. भाग्यम शर्मा
जयपुर (राजस्थान)

बच्चों का देश के प्रकाशन के सम्बन्ध में सूचना

फार्म – 4
(नियम 8 देखिए)

प्रकाशन स्थान	:	राजसमन्द (राजस्थान)
प्रकाशन अवधि	:	मासिक
प्रकाशक का नाम	:	संचयशील जैन
क्या भारतीय नागरिक है?	:	हाँ
(यदि विदेशी हैं तो मूल देश पता)		
पता	:	अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा) चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, सर्किट हाउस रोड, पो.बा.सं. 28 राजसमन्द–313 333 (राज.)
मुद्रक का नाम	:	संचयशील जैन
क्या भारतीय नागरिक है?	:	हाँ
(यदि विदेशी हैं तो मूल देश पता)	:	नहीं
पता	:	अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा) चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, सर्किट हाउस रोड, पो.बा.सं. 28 राजसमन्द–313 333 (राज.)
सम्पादक का नाम	:	संचयशील जैन
क्या भारतीय नागरिक है?	:	हाँ
(यदि विदेशी हैं तो मूल देश पता)	:	नहीं
पता	:	अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा) चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, सर्किट हाउस रोड, पो.बा.सं. 28 राजसमन्द–313 333 (राज.)
उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	:	अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा) चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, सर्किट हाउस रोड, पो.बा.सं. 28 राजसमन्द–313 333 (राज.)

मैं संचयशील जैन एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक 31.3.2022

संचयशील जैन
प्रकाशक के हस्ताक्षर

अंकों से चित्र बनाइये

अभ्यास करके अंको की मदद से सरल व सुन्दर चिड़िया का चित्र बनाना सीखिए ।

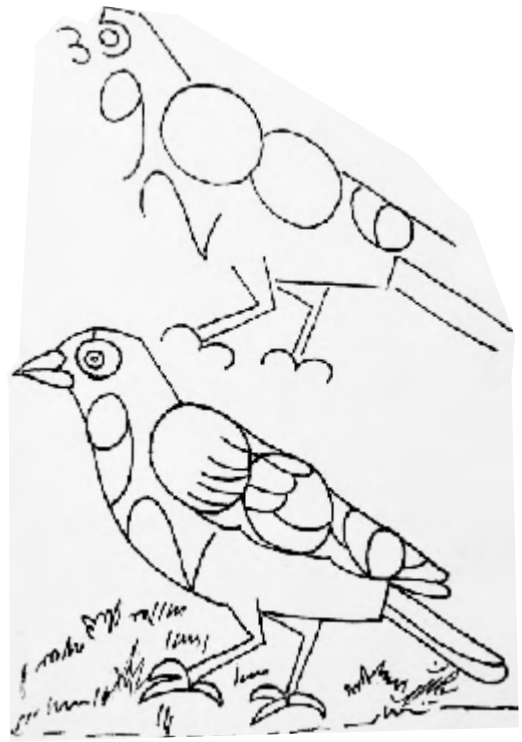

चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

व्हाट्सएप कहानी

एक व्यक्ति एक जंगल से गुजर रहा था कि उसने झाड़ियों के बीच एक साँप को फँसा हुआ देखा। साँप ने उससे सहायता माँगी तो उसने एक लकड़ी की सहायता से साँप को वहाँ से निकाला। बाहर आते ही साँप ने उस व्यक्ति से कहा कि– ''मैं तुम्हें डसूँगा।''

उस व्यक्ति ने कहा कि– ''मैंने तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार किया। तुम्हें झाड़ियों से निकाला और तुम मेरे साथ गलत व्यवहार करना चाहते हो।'' साँप ने कहा– ''हाँ, मेरी समझ में भलाई का जवाब बुराई ही है।'' उस आदमी ने कहा– ''चलो किसी से फैसला कराते हैं।'' चलते–चलते एक गाय के पास पहुँचे और उसको सारी बातें बताकर फैसला पूछा तो उसने कहा– ''वाकई भलाई का जवाब बुराई है क्योंकि जब मैं जवान थी और दूध देती थी तो मेरा मालिक मेरा ख्याल रखता था और चारा पानी समय पर देता था। लेकिन अब मैं बूढ़ी हो गई तो उसने भी ख्याल रखना छोड़ दिया है।''

ये सुन कर साँप ने कहा कि– ''अब तो मैं डसूँगा।'' उस आदमी ने कहा कि एक और प्राणी से फैसला करा लेते हैं। साँप मान गया और उन्होंने एक गधे से फैसला करवाया। गधे ने भी यही कहा– ''भलाई का जवाब बुराई है, क्योंकि जब तक मेरे अन्दर ताकत थी, मैं अपने मालिक के काम आता रहा जैसे ही मैं बूढ़ा हुआ उसने मुझे भगा दिया।''

साँप उसको डंसने ही वाला था कि उसने मिन्नत करके कहा कि एक आखिरी अवसर और दो, साँप के हक़ में दो फैसले हो चुके थे इसलिए वह आखिरी फैसला करने पर मान गया। अबकी बार वे दोनों एक बन्दर के पास गये और उसे भी सारी बातें बताई और कहा फैसला करो।

बन्दर ने सारी बात सुनकर आदमी से कहा कि मुझे उन झाड़ियों के पास ले चलो। साँप को अन्दर फेंको और फिर मेरे सामने बाहर निकालो, उसके बाद ही मैं फैसला करूँगा।

वह तीनों वापस उसी जगह पर गये, उस आदमी ने साँप को झाड़ियों में फेंक दिया और फिर बाहर निकालने ही लगा था कि बन्दर ने मना कर दिया और कहा कि उसके साथ भलाई मत करो, ये भलाई के काबिल नहीं है। सेवाभावी आदमी ने आज जीवन का एक नया पाठ सिखा।

सुडोकू

यह अंकों का जापानी खेल है, इससे बुद्धि का विकास होता है।

सुडोकू खेलना बहुत आसान है। खाली स्थानों को इस प्रकार भरें कि ऊपर से नीचे और बाएँ से दाएँ प्रत्येक पंक्ति एवं प्रत्येक नौ-नौ खानों के वर्ग में 1 से 9 तक अंक केवल एक बार आएँ।

9		7		1		2		
	8						9	
		2				5		
	7			6				2
			9		1			
3				2			4	
		5				6		3
	9		4				7	
7		6		8			2	9

उत्तर इसी अंक में

बिना पटरियों वाली ट्रेन

समय के साथ बहुत कुछ बदल जाता है। अब ट्रेनों की ही बात लें। ट्रेने तो सारी दुनिया में चलती हैं, लेकिन पटरियों पर। क्या कभी किसी ने सपने में भी सोचा था कि एक दिन ऐसा भी आएगा जब बिना पटरियों के ट्रेन चला करेंगी? यह असम्भव लगने वाली बात को सच कर दिखाया है चीन ने।

जी हाँ, चीन वह देश है जो कई क्षेत्रों में अग्रणी है और अपनी तकनीक से दुनिया को अचम्भित कर देता है। दिसम्बर 2019 में उसने ट्रेनों की दुनिया में यह अजूबा कर दिखाया, जबकि यिबिन शहर में ट्रेन ने बिना पटरी अपना सफर तय किया।

चीन ने दुनिया की पहली ऐसी ट्रेन शुरू की है, जो पटरियों पर नहीं, बल्कि सड़कों पर बने वर्चुअल (आभासी) ट्रैक पर चली है। पूरी तरह सेंसर पर आधारित यह ट्रेन सिचुआन प्रांत के यिबिन शहर में करीब 17.7 किलोमीटर का सफर पूरा करती है।

दो साल पहले इस योजना का खुलासा किया गया था। वर्ष दिसम्बर 2019 में इस ट्रेन के दरवाजे यात्रियों के लिये खोल दिए गए। चीन ने इसे भविष्य की ट्रेन बताया। यह ट्रेन 10 मिनट के चार्जिंग में 25 किलोमीटर तक चलने की क्षमता रखती है। कंपनी ने इसकी लाइफ 25 साल बताई है।

ट्रेन सेवा प्रदान करने वाली कंपनी का दावा है कि आने वाले समय में इस ट्रेन को आसपास के हाई–स्पीड रेल नेटवर्क से जोड़ा जाएगा। यिबिन आरटी–वन लाइन ट्रेन का? फिलहाल 10 हजार लोग प्रतिदिन उपयोग कर रहे हैं, लेकिन भविष्य में यह आंकड़ा बढ़कर 25 हजार तक पहुँचने का अनुमान है। ट्रेक 12.3 फीट चौड़ा है। इसे सफेद डोटेड लाइनों से पेंट किया गया है।

एआरटी या ऑटोनॉमस रेल रैपिड ट्रांजिट नाम की इस रेल प्रणाली को सीआरआरसी कॉर्पोरेशन लिमिटेड द्वारा विकसित किया गया है, जो दुनिया के सबसे बड़े ट्रेन निर्माताओं में से एक है। कंपनी के मुताबिक ड्राइविंग सीट पर बैठा व्यक्ति उसे चलाता नहीं, बस आपातकाल के दौरान कंट्रोल करेगा। ट्रेन का निर्धारित लाइनों के बाहर खड़ी होने या बाधा उत्पन्न होने की स्थिति में यह स्वचालित रूप से मैनुअल मोड़ में बदल जाएगी।

यह प्रोजेक्ट बच्चों का खेल नहीं था। इसमें 1130 करोड़ रुपये की लागत आई। ट्रेन 70 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से दौड़ती है। एक बार में 300 लोग इसमें सफर कर सकते हैं।

किरण बाला
मन्दसौर (मध्य प्रदेश)

मटके वाली कुल्फी

गर्मी की छुट्टियों में हमारा पूरा परिवार गाँव वाले घर में इकट्ठा होता था। सभी चाचा और बुआ अपने–अपने परिवार के साथ वहाँ आते थे। उस समय घर में ढेर सारे बच्चे भी हो जाते थे। फिर तो खूब धमा–चौकड़ी मचती थी। लेकिन जैसे ही दोपहर का समय होता था। सभी लोग खा–पीकर एक कमरे में आ जाते थे।

वह कमरा बहुत बड़ा था। उस कमरे में एक बहुत पुराना कूलर भी लगा था। वह ठंडा कम, आवाज ज्यादा करता था। लेकिन दिन की गर्मी से बचने के लिए सभी लोग उसी कमरे में रहना पसन्द करते थे। कमरा बड़ा होने के कारण सभी लोग उसमें आसानी से आ भी जाते थे। कुछ लोग कूलर की ठंडी हवा में सो जाते थे, तो कुछ लोग बातें करते रहते थे।

गर्मी की घनी दोपहरी में जब चारों ओर सन्नाटा छाया रहता था, तभी एक आवाज सुनाई पड़ती थी– ''कुल्फी खा लो कुल्फी। मटके वाली कुल्फी।''

आवाज सुनते ही बच्चे हो–हल्ला मचाने लगते थे। सभी कुल्फी खाने की जिद करने लगते थे। कभी गप्पू चाचा, तो कभी बड़े चाचा। कभी बड़ी बुआ तो कभी छोटी बुआ। सभी लोगों को कुल्फी खिलाते। गर्मी के दिनों में ठंडी कुल्फी खाना सबको अच्छा लगता है। वह कुल्फी वाला भी जानता था कि इस घर में ढेर सारे लोग हैं। इसलिए वह भी वहीं खड़े होकर जोर–जोर से चिल्लाया करता था– कुल्फी खा लो, कुल्फी! मटके वाली कुल्फी।''

पिंकी उन बच्चों में सबसे छोटी थी। एक कुल्फी से उसका मन नहीं भरता। इसलिए वह जल्दी–जल्दी अपनी कुल्फी खा डालती, फिर मम्मी की कुल्फी छिनने लगती। "मम्मी को खाने दो बेटा। तुम कल फिर खा लेना।" बड़ी मम्मी उसे समझाने का प्रयास करतीं। लेकिन पिंकी कहाँ मानने वाली? "मेरे लिए आप लोग दो कुल्फी खरीदा कीजिये। मुझे कुल्फी बहुत पसन्द है। एक कुल्फी से मेरा मन नहीं भरता।" पिंकी बड़े भोलेपन से उनसे बोलती। उसकी बात सुनकर सभी लोग हँस पड़ते।

"जब तुम बड़ी होना, तब तुम सबको दो–दो कुल्फी खिलाना।" एक दिन बड़ी बुआ उसे पुचकारते हुए बोली। "मैं तो अभी भी आप लोगों को दो–दो कुल्फी खिला सकती हूँ। मेरे पास बहुत पैसे हैं।" पिंकी बोली। "लेकिन तुम्हारे पास पैसे आये कहाँ से?" गप्पू चाचा ने उससे पूछा। "मेरे पापा मुझे हर रोज पैसे देते हैं।" पिंकी ने उन्हें बताया। उसकी बात सुनकर सभी लोग हँसने लगे। "तो फिर ठीक है। कल पिंकी हम सबको दो–दो कुल्फी खिलायेगी।" उसकी बात सुनकर बड़े चाचा बोले।

अगले दिन सभी लोग यह जानने को उत्सुक थे कि पिंकी इतने लोगों को दो–दो कुल्फी कैसे खिलायेगी? क्या सचमुच उसके पास पैसे हैं? अगर कोई उससे जानना चाहता तो वह हँस कर टाल देती। सभी लोग दिन में आराम करने के लिए कूलर वाले कमरे में लेटे थे। तभी कुल्फी वाले ने आवाज लगाई। सभी लोग पिंकी की ओर देखने लगे। पिंकी बड़े आराम से उठ खड़ी हुई और बाहर की ओर चल पड़ी। उसके पीछे–पीछे थी– बच्चों की पूरी फौज।

"कुल्फी वाले। आज सबको दो–दो कुल्फी

खिलाओ।" वह कुल्फी वाले से बोली । पहले तो कुल्फी वाला उसकी बात सुनकर चौंक पड़ा। लेकिन जब बड़े चाचा ने उसे अन्दर से इशारा किया, तब वह सभी को दो–दो कुल्फी देने लगा। पिंकी बड़े गर्व से सभी को देख रही थी। कुल्फी वाला सभी लोगों को कुल्फी देने के बाद पिंकी की ओर देखने लगा।

"कुल्फी वाले! तो अब बताओ। तुम्हारी कुल्फी के कितने पैसे हुए?" पिंकी ने कुल्फी वाले से पूछा। "पाँच सौ रुपये।" कुल्फी वाला बोला। पिंकी ने अपनी जेब में हाथ डाला और रुपये निकालने लगी। सभी लोग बड़ी उत्सुकता से उसकी ओर देख रहे थे। फिर उसने अपनी जेब से रुपये निकाल कर उस कुल्फी वाले को दे दिये। "यह क्या है?" कुल्फी वाला हँसते हुए बोला। "तुम्हारे पैसे।" पिंकी बोली।

"लेकिन यह तो बच्चों के खेलने वाले प्लास्टिक के नोट है। यह असली नहीं है ।" कुल्फी वाला थोड़ा नाराज होकर बोला। "इसे मेरे पापा ने दिया है। यह असली है।" पिंकी पूरे विश्वास से बोली। "लाओ लाओ। मैं देखता हूँ।" उसकी बात सुनकर बड़े चाचा बाहर आ गये। वहाँ आकर उन्हें सारी बात समझते देर नहीं लगी । वह तो सचमुच प्लास्टिक वाले नोट थे। असल बात यह थी कि जब भी पिंकी अपने पापा से पैसे माँगती तो पापा उसे बच्चों के खेलने वाले प्लास्टिक के नोट पकड़ा देते थे। वह अभी छोटी थी। इसलिए पापा ऐसा करते थे। लेकिन पिंकी उन्हें असली समझ कर बहुत सँभाल कर रखती जाती।

"यह तो असली है।" बड़े चाचा कुल्फी वाले को इशारा करके बोले। कुल्फी वाला उनका इशारा समझ गया। बड़े चाचा पिंकी को निराश नहीं करना चाहते थे। वे जानते थे कि पिंकी अभी बहुत छोटी है, इसलिए उसे बहुत सी चीजों की पहचान नहीं है।

"चलो पिंकी। तुम अन्दर चलो। इस कुल्फी वाले को कुछ पता नहीं है।" बड़े चाचा उससे बोले। पिंकी अन्दर चली गई। पिंकी के अन्दर जाते ही बड़े चाचा ने कुल्फी वाले को पाँच सौ का एक असली नोट दिया।

आज सभी लोग पिंकी की खूब प्रशंसा कर रहे थे। पिंकी भी खुशी से फूली नहीं समा रही थी। क्यों न हो? आखिर उसने सभी को दो–दो कुल्फी जो खिलाई थी। लेकिन असली बात तो केवल वह कुल्फी वाला और बड़े चाचा ही जानते थे। जब पिंकी बड़ी हो गयी, तब एक दिन बड़े चाचा ने उसे उसके बचपन की यह कहानी बताई। यह सुनकर सभी लोग हँसने लगे। पिंकी भी अपनी मूर्खता पर हँस पड़ी।

पवन कुमार वर्मा
वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

SPOT THE TWINS

Can you find two identical pictures

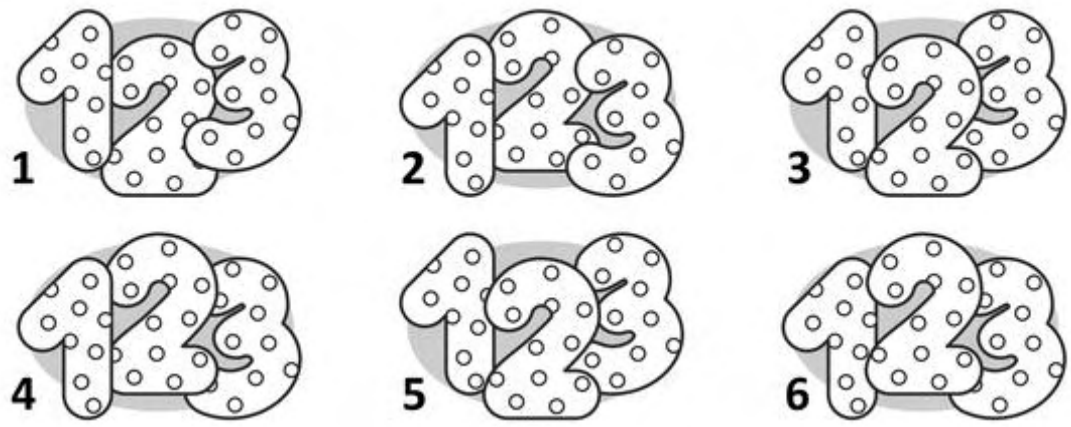

विद्यार्थियों के नाम : प्रश्नपत्र का पैगाम

प्रिय मित्रो !

मैं परीक्षा का प्रश्न पत्र हूँ। क्या डर गए? घबरा गए। अरे मैं तो तुम्हारा एक अच्छा दोस्त हूँ। परीक्षा में सफलता दिलवाने में तुम्हारी सहायता ही करता हूँ। मुझ से डरो मत। अपना फ्रेंड ही समझो। मेरा नाम सुनते ही तुम्हें सर्दी में भी पसीना आ जाता है। पता नहीं, क्या पूछूँगा मैं?

जो तुम्हारे विषय का कोर्स है, जो पाठ्य पुस्तकों अथवा स्टेट बोर्ड की किताबों में है, उनमें से ही बस कुछ प्रश्न पूछूँगा। तुम्हारी 150 पेज की पुस्तक में से कुछ प्रश्न पूछूँगा जिनके उत्तर तुम्हें निर्धारित समय में उत्तर पुस्तिका में लिखने हैं अथवा दिए हुए चार विकल्पों में से एक सही छाँट कर ओ एम आर शीट में भरने हैं। जिस विषय की परीक्षा देने जा रहे हो उनमें से ही प्रश्न आयेंगे। भौतिक विज्ञान में अर्थ शास्त्र नहीं पूछा जायेगा। हिन्दी के प्रश्न पत्र में गणित के सवाल नहीं करवाए जायेंगे।

स्कूल कॉलेज की परीक्षा का एक निर्धारित कोर्स है। इसकी किताबों को पढ़ने के लिए पूरा एक वर्ष मिला है। पढ़कर लिखोगे तो परीक्षा वाले दिन रिवीजन के लिए तुम्हारे अपने हाथ से लिखे नोट्स बहुत उपयोगी होंगे। पढ़ कर लिखने का अभ्यास करें। पूरी किताब पढ़ें। ट्यूशन, गाइड, कोचिंग के नोट्स पढ़ना तुम्हारा अपना निर्णय है लेकिन उनके पहले पाठ्य पुस्तक पढ़ना आवश्यक है ताकि तुम परीक्षा हॉल में मुझे देखकर परेशान नहीं हो।

परीक्षा से पहले कुछ मॉडल टेस्ट पेपर निर्धारित समय में हल कर लोगे तो मैं तुम्हें दुश्मन नहीं, दोस्त ही नजर आऊँगा। जिस प्रश्न में मैं तुमसे जितना पूछ रहा हूँ, उतना ही उत्तर लिखना। अपने लिखे को चेक कर लेना। सरल प्रश्नों का उत्तर पहले लिखना। नेगेटिव मार्किंग हो तो जो प्रश्न नहीं आते हैं, उनका उत्तर मत देना। एक बार में सफल नहीं हो सको तो स्वयं का मूल्यांकन कर अपनी गलती व कमजोरी सुधार कर दुबारा परीक्षा देना। मन लगाकर पूरे समय पढ़ाई की है तो बिना तनाव के तुम मेरे सभी प्रश्नों का सही उत्तर देकर अपना लक्ष्य प्राप्त कर लोगे। तो दोस्तो, अब तो तुम्हारा टेंशन दूर हो गया होगा। मिलते हैं फिर अगली परीक्षा के समय परीक्षा हॉल में।

तुम्हारा दोस्त

''प्रश्न पत्र''

दिलीप भाटिया
रावतभाटा (राजस्थान)

बास्केटबॉल
आविष्कार की कहानी

बास्केट बॉल दुनिया के सबसे लोकप्रिय खेलों में से एक है। खासकर अमेरिका में तो इस खेल के प्रति असीम दीवानगी देखने को मिलती है।

इस खेल के आविष्कार की भी एक रोचक कहानी है। अमेरिका के मैसाचुयेट्स के एक कॉलेज इंटरनेशनल यंग मैंस क्रिश्चियन एसोशिएसन ट्रेनिंग स्कूल में एक प्रोफेसर थे डा. जेम्स नाई स्मिथ। वह वहाँ शारीरिक शिक्षा की क्लास लेते थे। 1891 के दिसंबर महीने में एक दिन बारिश हो रही थी। वह अपनी क्लास नहीं ले पा रहे थे। तब उन्होंने सोचा कि कोई ऐसी जुगत लगाई जाए कि विद्यार्थी परिसर के अन्दर ही बिना भीगे कोई खेल खेल लें।

एक उपाय सोचकर उन्होंने एक दीवार पर एक बास्केट को टाँग दिया। फिर बच्चों से कहा कि उसमें बॉल डाले। यह नया खेल मजेदार था। तब डॉ. जेम्स ने इस खेल के कुछ नियम लिखे। उस समय बास्केट का निचला हिस्सा कटा नहीं होता था। अतः हर बार बास्केट करने के बाद उसमें से बॉल को निकलना पड़ता था। यह बड़ा मुश्किल काम था, अतः समय के साथ बास्केट का निचला हिस्सा काट दिया गया।

सन् 1905 तक ऐसे ही बास्केट लगाकर ही इस खेल को खेला जाता रहा। पर 1906 में इसे हटाकर लोहे के रिंग लगाने की परम्परा शुरू हुई, जो आज भी जारी है। पहले इस रिंग को किसी भी बालकनी पर टाँग दिया जाता था। पर इससे खेलने वाले के साथ–साथ वहाँ से आते–जाते या खेल देखते लोगों को भी परेशानी होती थी।

आखिर में लकड़ी में लगाकर बास्केट को किसी बाँस के सहारे मैदान में खड़ा कर दिया जाने लगा। इस तरह आज के आधुनिक बास्केट बॉल को इसका पूरा रूप मिला।

इस खेल के आविष्कार के तुरन्त बाद 1892 में महिलाओं ने इस खेल को खेलना शुरू किया और महिलाओं में इसे लोकप्रिय किया सैंडा ब्रेसनन ने। उन्होंने खुद जाकर डां. जेम्स नाई स्मिथ से इस खेल को समझा, फिर महिलाओं को सिखाया। पुरुषों से पहले महिलाओं ने इस खेल को आधिकारिक रूप से खेला और उनके बीच प्रथम मैच 21 मार्च 1893 को हुआ।

9 फरवरी 1895 को पहली बार हैमलिन यूनिवर्सिटी और स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर के बीच पुरुषों का बास्केट बाल का एक मुकाबला हुआ। 1932 में इंटरनेशनल बास्केटबॉल फेडरेशन की स्थापना हुई। इसे आठ देशों अर्जेटीना, चेकोस्लाविया, ग्रीस, इटली, लातविया, पुर्तगाल, रोमानिया और स्विट्जरलैंड ने मिलकर बनाया था।

1936 के बर्लिन ओलम्पिक में यह खेल पहली बार शामिल हुआ। तब अमेरिका ने कनाडा का हराकर पहली बार चैंपियन बनने का गौरव हासिल किया था।

अनिल जायसवाल
नई दिल्ली

- 1950 में पहली बार बास्केट बॉल की विश्व चैंम्पियनशिप अर्जेंटीना में हुई।
- महिलाओं की विश्व चैम्पियनशिप पहली बार चिली में 1953 में आयोजित हुई।
- 1976 के मांट्रियल ओलम्पिक में पहली बार महिला बास्केटबॉल को शामिल किया गया।
- अमेरिका में नेशनल बास्केटबाल एसोसिएशन की एनबीए टूर्नामेंट बेहद लोकप्रिय है।
- माइकल जानसन, करीम अब्दुल जब्बार, मैजिक जानसन इसके प्रसिद्ध खिलाड़ी हैं।

मिन्नी की जिद

भूरे बालों वाली मिन्नी एक छोटी सी पर्सियन बिल्ली है। वह बहुत उदास थी जब उसे अपनी माँ से अलग कर दिया गया था। लल्लन उसे अपने साथ गत्ते के डिब्बे में डालकर लाया था जिसमें जगह–जगह छेद बने हुए थे। चालीस दिन की मिन्नी अपनी माँ को याद करके म्याऊँ–म्याऊँ करती रहती थी। जब अधिक घबराने लगती तो उसी गत्ते के डिब्बे में दुबककर सो जाती। कई बार तो वह डर और गुस्से के मारे लल्लन को नोच भी डालती थी लेकिन लल्लन उसका बुरा नहीं मानता था। वह उसे ट्रीट देकर उसका मन बहलाता था।

जब लल्लन उसे अपनी गोद में लेकर उसकी गर्दन को सहलाता था तो मिन्नी कुछ देर के लिए अपनी माँ को भूल जाती थी। लल्लन को भी मिन्नी की छोटी सी लाल जीभ बहुत प्यारी लगती थी। वह अपनी हथेली पर ताजा दूध की गुनगुनी मलाई रखकर मिन्नी के सामने हथेली कर देता तो मिन्नी उसकी खुशबू से ललचाई कुछ सहमी–सहमी सी उसके पास आती और चसड़–चसड़ करके सारी मलाई चाट जाती। इस दौरान लल्लन उसकी पीठ पर हाथ भी फेरता रहता।

धीरे–धीरे मिन्नी और लल्लन में दोस्ती होने लगी। दोनों दिन भर खेलते और मस्ती करते। लल्लन के पापा ने उसे एक लकड़ी का जालीदार केबिन भी लाकर दिया जिसमें बिठाकर लल्लन उसे अपनी साइकल पर घुमाकर लाता था। अब मिन्नी अपनी माँ को याद नही करती। लल्लन की मम्मी ही उसकी माँ है।

मिन्नी बहुत आलसी है। दिन में अधिकांश समय घर के किसी कोने में छिपी सोती ही रहती है। स्कूल से घर लौटते ही जब लल्लन "मिन्नी–मिन्नी" पुकारता तो मिन्नी जहाँ कहीं भी सो रही होती है, तुरन्त आकर उसके पाँवों में अपनी पूँछ रगड़ने लगती है। लल्लन को उसकी इस हरकत पर बहुत प्यार आता और वह लपककर उसे गोद में उठा लेता है। चूँकि घर का हर सदस्य मिन्नी का बहुत ख्याल रखता और उसे प्यार करता, इसलिए मिन्नी को अपने आप पर घमंड हो गया। अब वह थोड़ी जिद्दी भी होने लगी थी। कई बार वह खाने में नखरे करती और कई बार किसी के बुलाने पर भी नहीं आती। आजकल तो दरवाजा खुला दिखते ही बाहर भाग जाती।

बार–बार बुलाने पर भी नहीं आती तो मम्मी को उसे ट्रीट का लालच देना पड़ता। एक दिन तो मिन्नी छत के दरवाजे से बाहर निकली और कूदती–फाँदती पड़ौसियों के घरों की छत से होती हुई कहीं दूर निकल गई। वो तो पड़ौसी उसे पहचानते थे, इसलिए वापस लल्लन के घर ले आये वरना पता नहीं उसका क्या होता? "कहीं गली का कोई कुत्ता नोच लेता तो क्या होता?" यह सोचकर ही लल्लन के रोंगटे खड़े हो गए। उसने मिन्नी को गले से लगा लिया और ढेर सारा प्यार किया। यह देखकर तो मिन्नी और भी अधिक गर्व से फूल गई। वह जान गई थी कि लल्लन और उसका परिवार उसे किसी भी खतरे से सुरक्षित बचा लेंगे।

लल्लन को मिन्नी का इस तरह जिद करना अच्छा नहीं लग रहा था। उसके पापा ने तो उसे यही सिखाया था कि जिद करना बुरी बात है और यही बात वह मिन्नी को भी समझाना चाहता था लेकिन मिन्नी किसी की सुने तब ना? आज सुबह जैसे ही

पापा ने अखबार उठाने के लिए घर का मुख्य दरवाजा खोला, वैसे ही मिन्नी तीर की तरह दरवाजे से बाहर... पापा उसे बुलाते ही रहे लेकिन मिन्नी ने बस एक बार ही पलटकर उनकी तरफ देखा। उसके बाद वह लोहे के गेट और सीमेंट के पिल्लर के बीच बनी खाली जगह में से होती हुई बाहर निकलने की कोशिश करने लगी। मिन्नी ने अपना सिर तो किसी तरह बाहर निकाल लिया लेकिन उसका मोटा पेट बीच में ही फँस गया। अब मिन्नी आधी अन्दर और आधी बाहर थी।

तभी सड़क पर कुत्तों के भौंकने की आवाजें आने लगी। आवाजें सुनते ही मिन्नी की घिग्गी बंध गई। उसने वापस भीतर आने की कोशिश की लेकिन वह दरवाजे और पिल्लर के बीच की जगह में फँस चुकी थी। कुत्ते पास आते जा रहे थे और मिन्नी को बचने की कोई तरकीब नहीं सूझ रही थी। उसने जोर–जोर से म्याऊँ–म्याऊँ चिल्लाना शुरू कर दिया। आश्चर्य! मिन्नी की पुकार सुनकर कोई भी सदस्य घर से बाहर नहीं निकला। ना तो लल्लन और ना ही पापा। मम्मी भी नहीं आई। मिन्नी को अपनी मौत सामने दिखाई दे रही थी।

'काश! उसने घरवालों की बात मानी होती। अकेले बाहर निकलने का खतरा मोल न लिया होता। बार–बार घर से भागने की कोशिश न की होती।' मिन्नी सोचती जा रही थी और कुत्ते थे कि और पास आते ही जा रहे थे। फाटक में फँसी हुई मिन्नी तो इस तरह फँसी हुई थी कि पीछे मुड़कर देख भी नहीं पा रही थी।

मिन्नी ने देखा। पूरे चार कुत्ते थे। अब तक कुत्तों की निगाह भी दरवाजे में फँसी मिन्नी पर टिक चुकी थी। वे चारों उसे घूर रहे थे। मिन्नी दम साधे उनके हमले का इंतजार करने लगी। किसी भी वक्त वह उनका शिकार बन सकती है। कुत्ते जैसे ही मिन्नी की तरफ लपके, एक मोटा डंडा कहीं से आकर उनके ऊपर गिरा। अचानक हुए इस हमले से कुत्ते डर गए और प्यों–प्यों करते दरवाजे से थोड़े दूर हो गए लेकिन उनकी नजर अभी भी मिन्नी पर ही बनी हुई थी। लल्लन छत से नीचे उतरा और उसने बहुत सावधानी से मिन्नी को उस कैद से आजाद करवाया।

गेट से छूटते ही मिन्नी ऐसी भागी ऐसी भागी कि घर के अन्दर वाले स्टोर में जाकर ही दम लिया। पूरा दिन बाहर भी नहीं निकली।

कमाल है! इस घटना के बाद तो मिन्नी एकदम ही बदल गई। अब घर का दरवाजा खुला रह भी जाये तब भी मिन्नी बाहर निकलने की कोशिश नहीं करती। बस जाली वाले गेट से सटकर बैठ जाती है और बाहर झाँकती रहती है। लल्लन को अब मिन्नी पर अधिक प्यार आने लगा है। उसने जिद करना जो छोड़ दिया है।

इंजी. आशा शर्मा
बीकानेर (राजस्थान)

मेरी पुस्तक

मेरी पुस्तक नानी जैसी
देती नव नित ज्ञान।
जीवन जीना हमें सिखाती
रखती सबका मान।

जंगल पर्वत घाटी धरती
और खेत खलिहान।
नदिया सागर झील जलाशय
कच्चे बने मकान।

कैसे हित करते हैं सबका
कैसे रखते ध्यान?
जीवन जीना हमे सिखाती
रखती सब का मान।

नई–नई तकनीकें मिलतीं
नई–नई नित खोज।
कम्प्यूटर को याद दिलाती
काम करो तुम रोज।

पढ़ लिखकर यह बना विश्व में
मेरा देश महान।
जीवन जीना हमें सिखाती
रखती सबका मान।

पेन्टर मदनलाल
उमरियापान (मध्य प्रदेश)

पढ़ो और जानो

इन प्रश्नों के उत्तर इसी अंक में हैं, आपको उन्हें ढूँढ़ना है।

1. घमंडी गोलू का स्वभाव कैसे बदला ?
2. जंगल के निर्माण में पक्षियों की क्या भूमिका है ?
3. आपकी एक प्रिय पुस्तक का नाम बताओ।
4. राजा ने कलाकार का सम्मान क्यों किया ?
5. दीर्घ श्वास क्रिया का कोई एक लाभ बताइये।
6. भारत के प्रथम फील्ड मार्शल का नाम बताओ।
7. इस अंक की नाटिका से क्या शिक्षा मिलती है?
8. इन दिनों पत्रिकाएँ कैसा अनुभव करती है ?
9. प्रश्न पत्र ने विद्यार्थियों से क्या कहा ?
10. सबसे शक्तिशाली कम्प्यूटर का क्या नाम है?

उत्तरमाला

दस सवाल : दस जवाब

(1) (अ) तरबूज 92 प्रतिशत (ब) जैलीफिश 95 प्रतिशत (स) रुधिर 50 प्रतिशत (द) अस्थि 20–25 प्रतिशत (2) अणुसूत्र H_2O अणुभार18 (3) हाइड्रोलोजी (4) हाइड्रोजन एवं आक्सीजन (5) 22 मार्च (6) 100°c (7) रंगहीन, गंधहीन, स्वादहीन (8) 71 प्रतिशत (9) इसमें साबुन झाग देता है। (10) नीर, सलिल, अम्बु, पय, वारि, तोय

अन्तर ढूँढ़िए

(1) फुटबॉल का आकार छोटा (2) लड़के के जूते का रंग अलग (3) सूरज का आकार बड़ा (4) फूल का पौधा अतिरिक्त (5) आकाश में एक पक्षी गायब (6) लड़की की स्कर्ट का रंग अलग (7) बेट गायब (8)कछुआ अतिरिक्त

दिमागी कसरत

(1) A (2) S (3) E (4) N (5) G (6) O (7) T (8) P (9) I (10) M (11) R (12) E (13) S (14) L (15) B

बूझो तो जानें

(1) बकरी (2) तितली (3) टीवी (4) पेड़ (5) ऊँट

SPOT THE TWINS

3 AND 5

वर्ग पहेली

1 स	2 र	3 स्व	ती	■	4 त	5 म	■
6 म	ग	र	■	7 म	नु	हा	8 र
ता	■	9 सं	स्कृ	त	■	10 व	ट
11 वा	12 रि	धि	■	दा	■	13 त	ना
14 द	वा	■	15 म	न	16 न	■	■
■	17 ज	18 म	ना	■	19 व	20 त	21 न
22 दा	■	ट	■	23 पा	नी	प	त
24 ख	ट	का	■	25 प	त	न	■

सुडोकू

9	5	7	6	1	3	2	8	4
4	8	3	2	5	7	1	9	6
6	1	2	8	4	9	5	3	7
1	7	8	3	6	4	9	5	2
5	2	4	9	7	1	3	6	8
3	6	9	5	2	8	7	4	1
8	4	5	7	9	2	6	1	3
2	9	1	4	3	6	8	7	5
7	3	6	1	8	5	4	2	9

सुहास चौधाले, कक्षा 4, धारवाड़

अन्वेषा गर्ग, कक्षा 5, उदयपुर

खुशी सेन, कक्षा 7

भाविका जाटोलिया, कक्षा 6

स्रोत : गुरु नानक पब्लिक स्कूल, शास्त्री सर्कल, उदयपुर

मैंने बनाई एक कलाकृति

मेरी मम्मी को अपने मोबाइल पर किसी ग्रुप में यह ड्राइंग प्राप्त हुई। उन्होंने मुझे इसे बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। बनाने से पहले मुझे थोड़ी सी कठिन लग रही थी पर बनाते बनाते वह मेरे लिए आसान हो गई।

यह ड्राइंग मंडला आर्ट में बनाई गई है। इस ड्राइंग को बनाने के लिए मुझे दो दिन लगे। सबसे पहले चित्र के लिए एक 130 GSM का एक मोटा कागज लिया। मैंने अपने अन्दाज से नापकर चित्र बनाये जिससे कि वह बराबर दिखे। सबसे पहले शेर का मुँह बनाया। उसके बाद बाएँ और दाएँ दोनों तरफ शेर बनाये। इसको स्केल की सहायता से दोनों तरफ बराबर नाप कर के बनाये जिससे कि यह दोनों तरफ से बराबर लगे । अन्दर के हिस्से में दो मछलियाँ, गौतम बुद्ध और बीच में कमल, हाथी, मोर और नमस्कार की मुद्रा में एक स्त्री का चित्र क्रमशः बनाया और चित्रानुसार अन्य आकृतियाँ बनाई।

मैंने कलरिंग के लिए प्लास्टिक शीट लेकर उसके ऊपरी तरफ ब्रश पेन से नारंगी और नीचे की तरफ हरा रंग, बीच में सफेद रंग की जगह छोड़ी। फिर कागज के ऊपर और नीचे पानी लगाया। ध्यान रखा कि कागज की सफेद जगह पर पानी न लगे और उसके ऊपर प्लास्टिक शीट रखी। यह काम मैंने जल्दी और सफाई से किया। फिर उसे सूखने दिया। मैंने इस काम में ब्लैक वॉटरप्रूफ जेल पेन का इस्तेमाल किया जिससे रंग फैले नहीं।

प्रिशा चौखड़ा, कक्षा 7, थाने महाराष्ट्र

आप भी अपनी कलम और कूँची का कमाल हमें मोबाइल नं. 9351552651 पर या पत्रिका के पते पर भेजें।

होली के रंग

रंग खिला
हर रूप खिला
खिला-खिला हर चेहरा
धूप खिली, अबीर उड़ी
मिटी सभी शिकायते
गले मिले और चंग बजे
होली के रंग में लिखे
नई इबारते ...

पूजा

पलक

सुखी भील, गीता भील

खुशबू

मनीषा

जमना भील

नारायणी भील

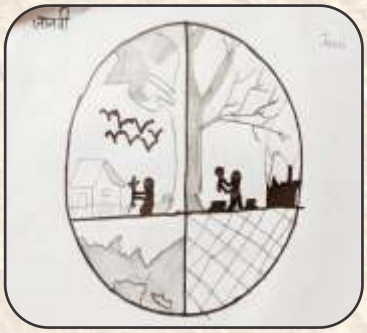

जाहनवी

: सामग्री सौजन्य :
आई.आई.एफ.एल.
फाउंडेशन द्वारा
गाँवों में संचालित
सखियों की बाड़ी केन्द्र
ब्लॉक रोहट, सहाड़ा

नन्हा अखबार

देश व दुनिया की खबरें जो आप जानना चाहेंगे

अनूठी डिजाइन की जमीन में धंसी इमारत

ईरान की राजधानी तेहरान के पारडिस साइंस एंड टेक्नोलॉजी पार्क में टर्बोसील नाम की यह इमारत हाल ही में तैयार हुई है। इसका अनूठा डिजाइन इन दिनों पूरे विश्व में चर्चा का विषय बना हुआ है। दूर से देखने पर लगता है मानो इमारत आधी जमीन में धंसी हुई है। वैसे इस पाँच मंजिला ऑफिस बिल्डिंग की दो मंजिलें जमीन से नीचे ही हैं। 26909 वर्गफीट एरिया में बनी इमारत में स्टील और काँच का उपयोग बहुतायत में हुआ है। इसमें पर्याप्त प्राकृतिक रोशनी मिलती है। इसे ग्लास एनवलप भी कहते हैं।

रेलवे की 'कवच' सुरक्षा प्रणाली का सफल परीक्षण

सिकंदराबाद में स्वदेश निर्मित ट्रेन टक्कर सुरक्षा प्रणाली कवच का परीक्षण किया गया जिसमें दो ट्रेनें पूरी रफ्तार के साथ विपरीत दिशा से एक दूसरे की तरफ आई। इनमें से एक ट्रेन में रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव सवार थे और दूसरी ट्रेन में रेलवे बोर्ड के चेयरमेन । दोनों ट्रेने 380 मीटर पहले अपने आप रुक गई। इस प्रकार कवच सुरक्षा प्रणाली का सफल परीक्षण हुआ।

फेंकी हुई फालतू चीजों से बनी मूर्तियाँ

थॉमस डेंबो एक डेनिश कलाकार है, जो पुरानी फेंकी गई सामग्री से उपयोगी चीजें बनाने का काम करते हैं। उन्हें अपनी विशाल ट्रोल स्कल्पचर (ट्रोल मूर्तियों) के लिए जाना जाता है, जो 16 से 50 फीट की ऊँचाई तक के होते हैं। इन मूर्तियों को सामान्य पार्कों, औद्योगिक पार्कों और अन्य विशिष्ट स्थानों पर लगाया जाता है। डेंबो ने दुनिया के सबसे प्रमुख रीसायकल कलाकार का खिताब अपने नाम किया है।

भारत के युवा ग्रैंडमास्टर आर प्रागननंदा

ऑनलाइन रैपिड शतरंज टूर्नामेंट एयरथिंग्स मास्टर्स के 8वें दौर में 16 साल के प्रागननंदा ने दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी मैग्नस कार्लसन को हरा दिया। प्रागननंदा ने खेली गई बाजी में काले मोहरों से खेलते हुए कार्लसन को 39 चाल में हराया। उन्होंने इस तरह से कार्लसन के विजय अभियान पर भी रोक लगायी, जिन्होंने इससे पहले लगातार 3 बाजियाँ जीती थी। इस जीत से भारतीय ग्रैंडमास्टर के आठ अंक हो गए हैं और वह आठवें दौर के बाद संयुक्त 12वें स्थान पर हैं।

सबसे शक्तिशाली सुपर कम्प्यूटर

भारतीय विज्ञान संस्थान (आइआइएससी) में देश के सबसे शक्तिशाली सुपर कंप्यूटर 'परम प्रवेग' को स्थापित किया गया है जो एक सैकंड में अरबों ऑपरेशंस करसकता है। इसकी सुपर कंप्यूटिंग क्षमता 3.3 पेटाफ्लॉप्स यानी 10 लाख अरब ऑपरेशंस प्रति सैकंड है। आशा है कि इससे देश भर में हो रहे विविध अनुसंधान और शैक्षिक गतिविधियों को मदद मिलेगी। राष्ट्रीय सुपर कंप्यूटर मिशन के तहत अब तक 10 बड़े सुपर कंप्यूटर निर्मित किए गए हैं जिनकी स्थापना, प्रमुख संस्थानों में की गई। इनकी कुल कंप्यूटिंग क्षमता 17 पेटाफ्लॉप्स हो चुकी है। इनकी मदद से देश भर में अब तक लगभग 2600 शोधकर्ताओं ने लगभग 31 लाख कम्प्यूटेशनल कार्य सफलतापूर्वक पूरे किए हैं।

मुस्कुराने से ही खुलता है यह दरवाजा

भागदौड़ की जिन्दगी में अगर कोई चीज हमसे दूर जा रही है तो वह है हमारी हैप्पीनेस (खुशी) और इमोशन (भावनाएँ)। इसे देखते हुए सबसे पहले 2018 में यूएई के एक कार्यालय के निकास द्वार पर ऐसा सेंसर लगाया जहाँ बिना मुस्कुराए बाहर नहीं जा सकते। सेंसर में देखकर पहले आपको मुस्कुराना होता है, इसके बाद ही दरवाजा खुलता है। हाल ही ऐसे प्रयोग चीन व डेनमार्क में भी हुए हैं। ऐसे तकनीकी उपाय निश्चित ही मानव के चेहरे पर खुशी की मुस्कान लाने में सफल होंगे।

I like the most...

I like the most my India
My favorite country is India

I like to hoist our tricolor
I like to respect our tricolor

I like writing Poem
I like reading Poem

I like reading story
I like writing story

I like the most my family
I love my lovely family

I like singing song
I like listening song

I like to study everyday
So I do study everyday

I like the most to pant
I like the most to draw

I like to plant tree
I like to live stress free

Pakhi Jain
Class -4,Udaipur Rajasthan

I like the most Bhagavat Gita, which is a holy book. It consists of 18 adhyays, every adhyays has 20 to 24 shloks. I am very happy to learn the shloks, understand them and apply them in my daily life. I like to take inspiration and learn the shloks as they are the life long lessons.

During this lockdown there is no one who hasn't watched Ramayan and Mahabharat. So inspired from Ramayan and Mahabharat me and my sister decided to learn Bhagvat Gita. Then from the help of one of my mother's friend, we joined a group named Gita Parivar. They teaches Bhagavat Gita for free, in a very systematic and easy way, so that each and every student can understand it in a interesting and exciting way. It has been 2 years that we have joined the group. They are doing such a nice job in spreading India's culture to each and every one. What I like about this is understanding and being grateful for our culture .

Sneha Chokhda
Class-10, Thane, Maharashtra

(We received these views from the BKD Creativity Club members on the given topic "I like the most".)

जन्मदिन की बधाई

A LION'S HELP

by Venu Variath

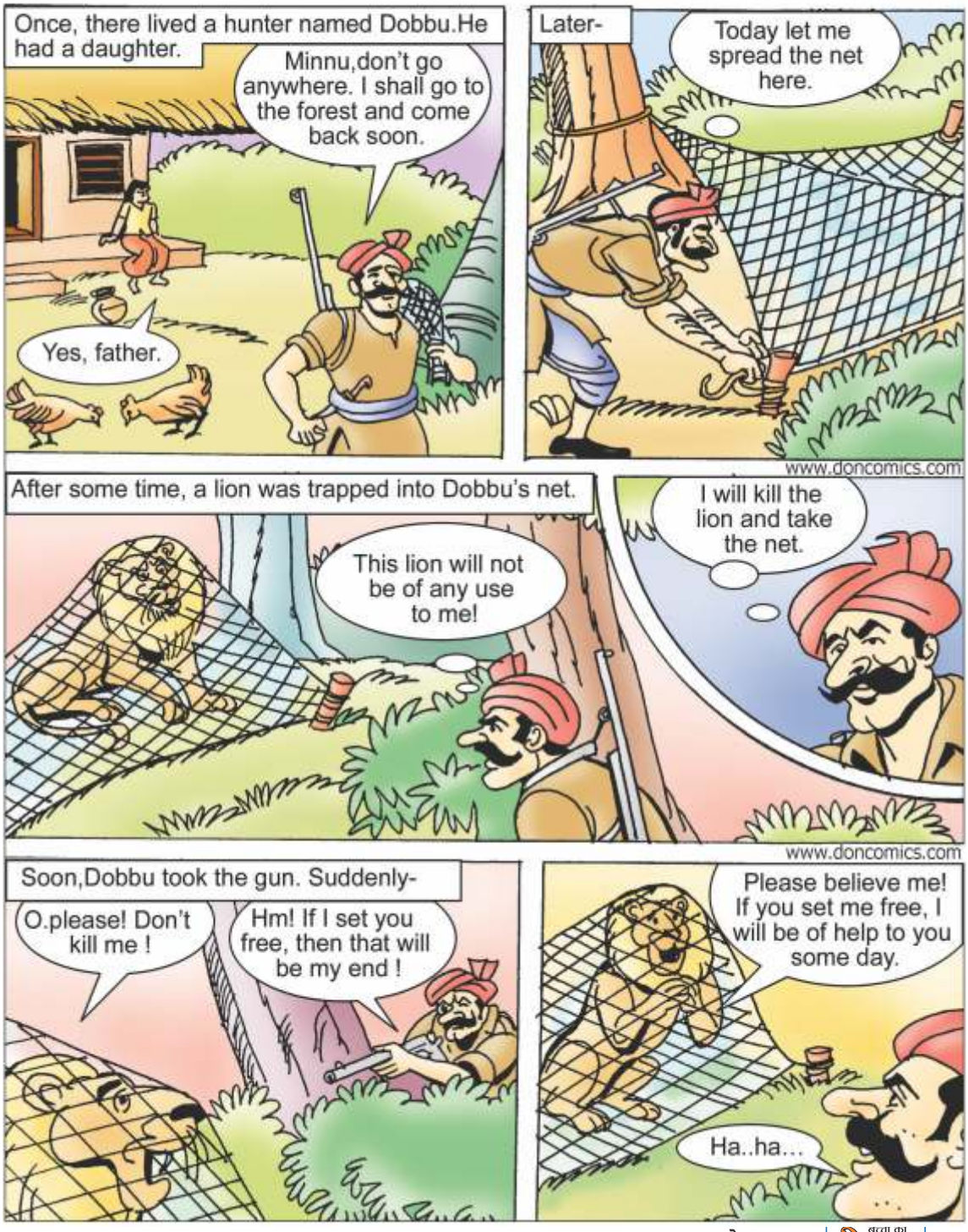

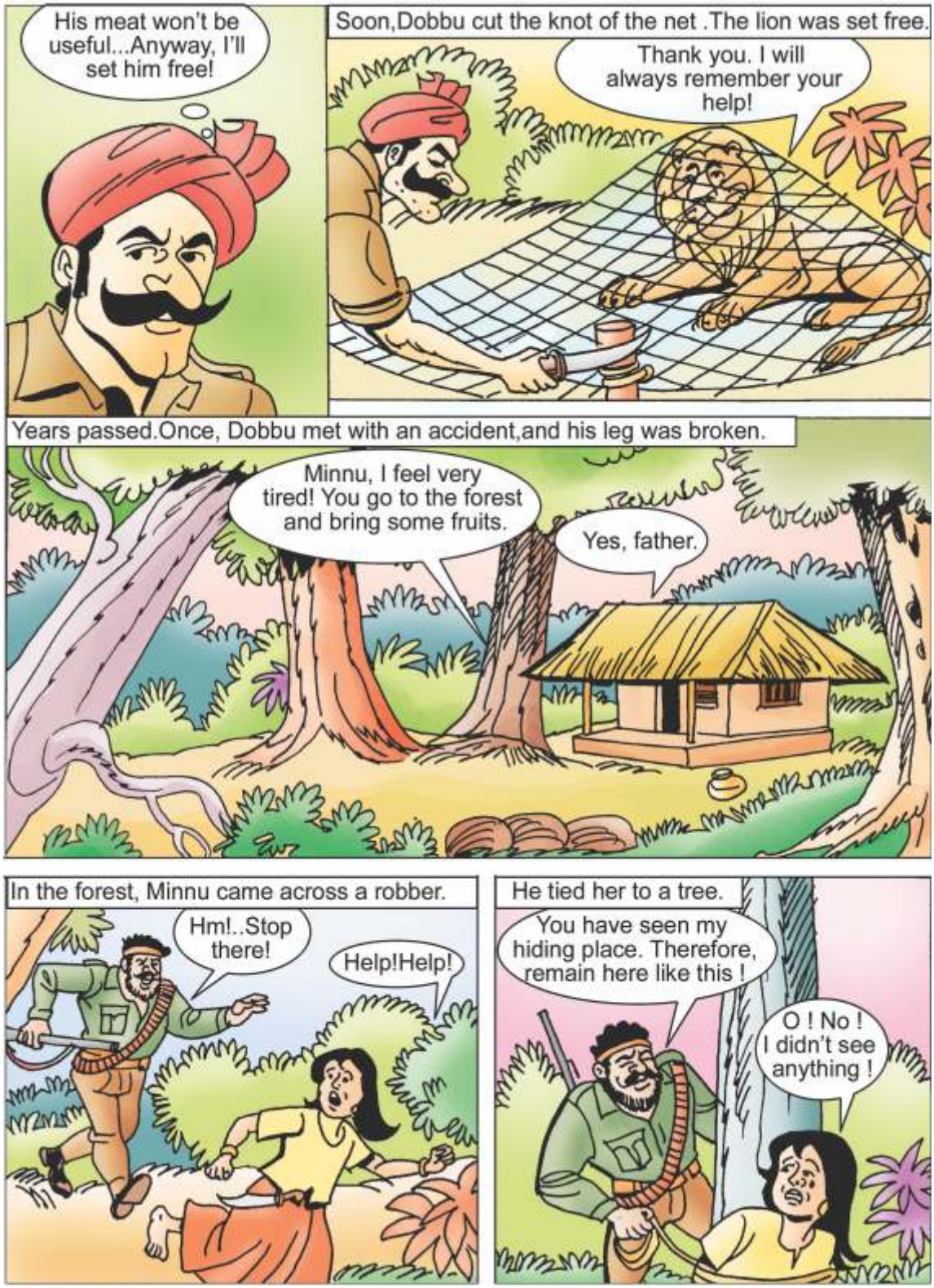
His meat won't be useful...Anyway, I'll set him free!
Soon,Dobbu cut the knot of the net .The lion was set free.
Thank you. I will always remember your help!
Years passed.Once, Dobbu met with an accident,and his leg was broken.
Minnu, I feel very tired! You go to the forest and bring some fruits.
Yes, father.
In the forest, Minnu came across a robber.
Hm!..Stop there!
Help!Help!
He tied her to a tree.
You have seen my hiding place. Therefore, remain here like this !
O ! No ! I didn't see anything !

After some time two lion's came that way.
Eh…Who is this ?
Hi..hi…This is good enough for the day !
The lion then saw the small dagger on Minnu's dress .
Eh!This dagger belongs to the hunter who helped me!
Help !
I doubt whether we should kill her!
Why?
From where did you get this dagger?
I.. I am the daughter of Dobbu the hunter. My father gave this to me.
Minnu told everything to the lion.
Don't worry, little girl. We won't harm you!
Eh!

Look and Colour

There are five differences between the two pictures. Can you find them?

Shadow Play

Draw lines to match the shadows with the pictures.

Beginning Letters

Fill in the blanks with the correct beginning letter.

_ n a i l

_ r o w n

_ a t

नई पीढ़ी में रचनात्मकता और सकारात्मकता
को प्रोत्साहित करने का राष्ट्रव्यापी अभियान
ANUVRAT
CREATIVITY
CONTEST
प्रतियोगिताएं
लेखन
चित्रकला
गायन
भाषण
विषय
पर्यावरण का संरक्षण
दायित्व हमारा हर क्षण
स्कूल स्तर पर प्रतियोगिता के प्रथम चरण की अंतिम तारीख
31 जुलाई, 2022
राष्ट्रीय स्तर पर आकर्षक पुरस्कार
ग्रुप-1 : कक्षा 3-5, ग्रुप -2 : कक्षा 6-8, ग्रुप-3 : कक्षा 9-12
अधिक जानकारी के लिए
https://anuvibha.org/acc
acc@anuvibha.org
+91-91166-34514
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
अणुविभा
सहयोगी प्रकल्प

RNI No. 72125/99
Postal Reg. No.: RJ/UD/29-157/2022-24
Posting Date : 27 & 29
Posted at : Kankroli

दादा साहब फालके

जन्म : 30 अप्रैल, 1870 ■ निधन : 16 फरवरी, 1944

मूल नाम धुंडीराज गोविंद फालके का जन्म त्र्यंबकेश्वर (महाराष्ट्र) में हुआ। वे ऊँचे सपने देखने वाले, दृढ़ संकल्पी एवं घोर परिश्रमी व्यक्ति थे। आपने भारत की पहली मूक फिल्म "राजा हरिश्चंद्र" का निर्माण कर भारतीय सिनेमा की नींव रखी। इसीलिए आपको "भारतीय फिल्म उद्योग का पितामह" कहा जाता है। आपने अपने जीवन काल में 125 फिल्में बनाई। आपकी स्मृति में भारत सरकार प्रतिवर्ष एक कलाकार को दादा साहब फालके पुरस्कार प्रदान करती है।

बच्चों का देश
राष्ट्रीय बाल मासिक